सविता

हिंदी गृह पत्रिका

अप्रैल 2019 – सितम्बर 2019

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)

एवं

महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) के कार्यालय

केरला, तिरुवनंतपुरम

स्वतंत्रता दिवस 2019 की झलकियां

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

हिंदी गृह पत्रिका

अप्रैल 2019 – सितम्बर 2019

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री एस. सुनील राज

महालेखाकार

संरक्षक

श्री को.प. आनंद

महालेखाकार

संपादक मण्डल

परामर्शदाता
श्री मोहम्मद अशरफ जे.एस.
उप महालेखाकार (प्रशा.एवं रा.क्षे.)

मुख्य संपादक
श्री अनीष डी.
वरि. उप महालेखाकार (प्रशासन)

सदस्य

श्रीमती एस. लक्ष्मी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री शिबी बेन्नी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका
हिंदी अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा
हिंदी अधिकारी

श्रीमती राधिका टी वी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती सिमी राजेश
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री किरणदीप कौर
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री सादत हुसैन रिज़वी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं।

संदेश

कार्यालयीन गृह पत्रिका का नवीनतम अंक सहर्ष आपके सम्मुख समर्पित है। 'ग' क्षेत्र में स्थित हमारे कार्यालय से निकल रही पत्रिका में हिंदी भाषी और हिंदीतर भाषी रचनाकारों का समान सहयोग कार्यालय में राजभाषा की स्वीकार्यता को दर्शाता है। यह न केवल कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन को प्रतिबिंबित करती है, बल्कि उन प्रतिभाओं को भी अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है जो राजभाषा हिंदी के उद्देश्यों व लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्ध हैं।

भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति इसी प्रकार का उत्साह बनायें रखें यही कामना है। पत्रिका के प्रति शुभकामनाएं प्रकट करते हुए हार्दिक शुभेच्छाओं के साथ।

को.प. आनंद
महालेखाकार (आ.रा.क्षे.ले.प)

संदेश

हमारी कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'सविता' के प्रकाशन पर अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

कार्यालय में राजभाषा हिंदी के लिए सकारात्मक एवं अनुकूल वातावरण तैयार करने में कार्यालयीन पत्रिकाओं का बड़ा योगदान होता है। पेशेवर रचनाकार ना होते हुए भी अपनी रचनाओं से हमारी पत्रिका को संवारने वाले कर्मीवृंद अपनी साहित्यिक रुचि के अलावा हिंदी भाषा के प्रति अपना लगाव भी दर्शा रहे हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन।

सुनील

एस. सुनील राज

महालेखाकार (सा.सा.क्षे.ले.प)

संदेश

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ किसी भी संस्कृति की परिचायिका की भूमिका भी निभाती है । भारतीय संस्कृति, परंपरा एवं भावना से जुडी हुई यह भाषा भारत के अधिकतर लोगों की या तो मातृभाषा है, या मातृभाषा से कई दृष्टियों से मिलती जुलती भाषा । सरकारी कामकाज के लिए जनता की भावना, संस्कृति व परंपरा से जुडी हुई भाषा की ही आवश्यकता है, इसी कारण हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है ।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्य में कार्यालयीन पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है । मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालय की विविध गतिविधियों को प्रेषित करने में सराहनीय भूमिका निभा रही है । पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

मोहम्मद अशरफ़ जे.एस
उप महालेखाकार
(प्रशा. एवं रा.क्षे.)

संपादकीय

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देना प्रत्येक कार्यालय का दायित्व है। राजभाषा के संवर्धन को प्रेरणा और प्रोत्साहन देने से संबंधित कार्यालय के दायित्वों में हिंदी गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन का स्थान महत्वपूर्ण है। हमारी हिंदी गृह पत्रिका 'सविता' राजभाषा हिंदी के प्रचार - प्रसार एवं प्रोत्साहन को समर्पित अर्ध वार्षिक पत्रिका है। अपने इस दायित्व को निभाने के अलावा कार्यालय की गतिविधियां भी इसमें प्रतिबिंबित होती हैं और इससे कार्यालय के कर्मियों को अपने विचारों और प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने का उत्तम मंच भी प्राप्त होता है। संपादक मंडल एवं प्रतिभावान रचनाकारों के सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों का परिणाम हमारी हिंदी गृह पत्रिका 'सविता' का नवीनतम अंक आपके बहुमूल्य विचारों की प्रतीक्षा करते हुए सादर प्रस्तुत है।

अनीष

डॉ. डी अनीष

उप महालेखाकार (प्रशासन)

1. चुण्डावत मांगी सैनाणी, सिर काट दे दियो हाड़ी राणी	श्री अनिल कुमार शर्मा, लेखापरीक्षक
2. लौ	श्री कुमार सौरभ, वरि.लेखापरीक्षक
3. ग्लोबल वॉर्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन	सुश्री अश्वती एस., बहु कार्य कर्मी
4. बोनसायी	श्रीमती उषा बर्टी, व.ले.प.अधिकारी
5. कुएं का रहस्य	साई कुमार जे.ए., वरिष्ठ लेखापरीक्षक
6. भारतीय रेलवे – 1853 से अब तक	सुश्री किरणदीप कौर, क. हिंदी अनुवादक
7. मेरी पहली आधिकारिक यात्रा	श्री शुभम रायकवार, आशुलिपिक
8. ज़िंदगी का राज़	श्री जोशुआ जोन, सुपुत्र श्रीमती उषा बर्टी, व.ले.प.अ.
9. कुदरत	सुश्री विस्मया एस.एस, सुपुत्री श्री षाजी वी एस, ले.प
10. भगवान और इंसान	श्री कैलाश मीणा, डी ई ओ
11. खामोश नहीं रे अपनी ये कुदरत	विजेष वी., लेखापरीक्षक
12. यादें	श्री ए.एन. गोविंद, सुपुत्र श्री वी सी नारायणन पोट्टी, व.ले.प.अ.
13. बंजी जम्पिंग	श्री केवल कुमार मकवाना, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
14. मार्च 2017 को समाप्त वर्ष के लिए, सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र – केरला सरकार पर भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट सं. 4 का सार	
15. नीयत	श्रीमती प्रियंका चौरसिया, डी ई ओ
16. कब तक	सुश्री नीरू त्रिपाठी, आशुलिपिक
17. हैरतअंगेज़ लद्दाख	सुश्री के.एस. मीनाक्षी, सुपुत्री श्रीमती जे.आर.आशा, हिंदी अधिकारी
18. कला नशा है – नशा कला नहीं	श्री बिपिन ई.बी, स.ले.प. अधिकारी
19. पहला पाठ	श्री आशीष कुमार, लेखापरीक्षक
20. याद	श्री षानवाज़ नज़ीर मोहम्मद, वरि. लेखापरीक्षक
21. मैं वापस जाना चाहती हूँ	श्रीमती राधिका टी.वी, व.हिंदी अनुवादक
22. मेरे जीवन की राह	श्री नरेश शर्मा, लेखापरीक्षक
23. मानव	श्री अभिनंद अनीष, पुत्र जॅस्मिन ए, लिपिक
24. संगीत	श्रीमती सिमी राजेश, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
25. तन्हाई	जे आर मालविका सुपुत्री श्रीमती राखी पी ओ, स.ले.प.अधिकारी
26. कह रही धरा तुम्हें	अमित, स.ले.प.अधिकारी
27. औरत	सुनील कुमार, डी.ई.ओ
28. मेरी अमानत	अतुल कृष्णा डी. सुपुत्र श्री कृष्णकुमार वी जी, लेखापरीक्षक

" चुण्डावत मांगी सैनाणी,
सिर काट दे दियो हाड़ी राणी "

अनिल कुमार शर्मा
लेखापरीक्षक

राजस्थान की पूज्य धरा के लिए कविवर रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था कि जब भी मैं इस पूज्य धरा पर कदम रखता हूं तो मेरे पैर एकाएक ही रुक जाते हैं, मेरा हृदय सहम जाता है कि कहीं मेरे पैरों तले किसी वीर की समाधि या किसी वीरांगना का वीरगति स्थान ना हो । यह वाक्य राजस्थान के परिचय में कहे गए हैं। ऐसे बहुत से लोगों द्वारा कहे गए शब्द, राजस्थान के अमर इतिहास को बताते दिखाई पड़ते हैं । इसी अमर इतिहास से आज हम आपके लिए एक ऐसी रानी की कहानी लाए हैं जिसके बलिदान की यशोगाथा राजस्थान के हरेक अंचल में आज भी सुनाई पड़ती है तो आइये जानते हैं- हाड़ी रानी का इतिहास...

"चुण्डावत मांगी सैनाणी,
सिर काट दे दियो हाड़ी रानी"

इन दो पंक्तियो में हाड़ी रानी के बलिदान की कहानी छिपी है जो शायद ही इतिहास में कहीं और देखी गई हो ! राजस्थान में गाया जाने वाला यह गीत इस वीरांगना के अमर बलिदान को कहता है।

यह उस समय की बात है जब मेवाड़ पर महाराणा राजसिंह (1652 - 1680 ई.) का शासन था । इनके सामन्त सलुम्बर के राव चुण्डावत रतन सिंह थे । जिनकी हाल ही में हाड़ा राजपूत सरदार की बेटी, हाड़ी रानी से शादी हुई थी । लेकिन शादी के सात दिन बाद ही राव चुण्डावत रतन सिंह को महाराणा राजसिंह का सन्देश प्राप्त हुआ, जिसमें उन्होंने राव चुण्डावत रतन सिंह को दिल्ली से औरंगज़ेब की सहायता के लिए आ रही अतिरिक्त सेना को रोकने का सन्देश दिया था।

यह सन्देश मिलते ही चुण्डावत रतन सिंह ने अपनी सेना को युद्ध की तैयारी का आदेश दे दिया । वह इस सन्देश को लेकर अपनी पत्नी हाड़ी रानी के पास पहुँचे और सारी बात सुनाई । जिसके बाद हाड़ी रानी ने अपने पति को युद्ध में जाने के लिए तैयार किया । उनके लिए विजय की कामना के साथ उन्हें युद्ध के लिए विदाई दी ।

सरदार अपनी सेना के साथ हवा से बातें करता चला जा रहा था, किन्तु उसके मन में रह रह कर यह विचार आ रहा था कि कहीं सचमुच मेरी पत्नी मुझे बिसार न दे ! कहीं वो मेरी पराजय के बाद किसी विजयी राजा से विवाह न कर ले । वह मन को समझाता पर उसका ध्यान उधर ही चला जाता, अंत में उससे रहा न गया । उसने आधे मार्ग से अपने विश्वस्त सैनिक को, रानी के पास भेजा एवं उन्हें फिर से स्मरण कराया कि मुझे भूलना मत । मैं ज़रूर लौटूंगा ।

संदेश वाहक को आश्वस्त कर रानी ने लौटाया । दूसरे दिन एक और वाहक आया । फिर वही बात । तीसरे दिन फिर एक आया । इस बार वह पत्नी के नाम सरदार का पत्र लाया था । प्रिय मैं यहां शत्रुओं से लोहा ले रहा हूं । अंगद के समान पैर जमाकर उनको रोक दिया है । मजाल है कि वे ज़रा भी आगे बढ़ जाएं लेकिन तुम्हारी बड़ी याद आ रही है। पत्र वाहक द्वारा कोई अपनी प्रिय निशानी/ सैनाणी अवश्य भेज देना । उसे ही देखकर मैं मन को हल्का कर लिया करूंगा । हाड़ी रानी पत्र को पढ़कर सोच में पड़ गई । युद्धरत पति का मन यदि मेरी याद में ही रमा रहा, उनके नेत्रों के सामने यदि मेरा ही मुखड़ा घूमता रहा तो वह शत्रुओं से कैसे लड़ेंगे । विजय श्री का वरण कैसे करेंगे ?

उसके मन में एक विचार कौंधा । वह सैनिक से बोली वीर ? मैं तुम्हें अपनी अंतिम निशानी दे रही हूं । इसे ले जाकर उन्हें दे देना । थाल में सजाकर सुंदर वस्त्र से ढककर अपने वीर सेनापति के पास पहुंचा देना । किन्तु इसे कोई और न देखे। वे ही खोल कर देखें । साथ में मेरा यह पत्र भी दे देना । हाड़ी रानी के पत्र में लिखा था प्रिय... मैं तुम्हें अपनी अंतिम निशानी भेज रही हूं । तुम्हारे मोह के सभी बंधनों को काट रही

हूं। साथ ही इस बात का प्रमाण भी भेज रही हूं कि आप के सिवा किसी और से विवाह का विचार भी मेरे मन में कभी नहीं होगा। अब बेफ्रिक होकर अपने कर्तव्य का पालन करें मैं तो चली... स्वर्ग में तुम्हारी बाट जोहूंगी। पलक झपकते ही हाड़ी रानी ने अपनी कमर से तलवार निकाल, एक झटके में अपने सिर को उड़ा दिया !!! वह धरती पर लुड़क पड़ा। सिपाही के नेत्रों से अश्रुधारा बह निकली। कर्तव्य कर्म कठोर होता है सैनिक ने स्वर्ण थाल में हाड़ी रानी के कटे सिर को सजाया। सुहाग के चूनर से उसको ढका।

भारी मन से युद्ध भूमि की ओर दौड़ पड़ा। उसको देखकर हाड़ा सरदार स्तब्ध रह गया उसे समझ में न आया कि उसके नेत्रों से अश्रुधारा क्यों बह रही है ? धीरे से वह बोला क्यों यदु सिंह ! रानी की निशानी ले आए ? यदु ने कांपते हाथों से थाल उसकी ओर बढ़ा दिया। हाड़ा सरदार फटी आंखों से पत्नी का सिर देखता रह गया। उसके मुख से केवल इतना निकला उफ्फ...! हाय रानी। तुमने यह क्या कर डाला। संदेही पति को इतनी बड़ी सज़ा दे डाली। ख़ैर.. मैं भी तुमसे मिलने आ रहा हूं।

हाड़ा सरदार के मोह के सारे बंधन टूट चुके थे। वह शत्रु पर टूट पड़ा। इतना अप्रतिम शौर्य दिखाया कि उसकी मिसाल मिलना बड़ा कठिन है। जीवन की आखिरी सांस तक वह लड़ता रहा। औरंगज़ेब की सहायक सेना को उसने आगे ही नहीं बढ़ने दिया, जब तक मुगल बादशाह मैदान छोड़कर भाग नहीं गया। इस विजय का श्रेय आज भी राजस्थान के अंचलों में हाड़ी रानी को उनके अमर बलिदान की यशोगाथाओं में दिया जाता है।

लौ

कभी जल रहा हूँ, कभी बुझ रहा हूँ।
न जाने क्यूँ खुद से, मैं छुप रहा हूँ।
तेरे प्यार की लौ, ज़िन्दा है दिल में,
कभी बोलता हूँ, कभी चुप रहा हूँ।।

लहरें हैं तेज़, किनारा नहीं है।
बेबस हूँ मैं पर, सहारा नहीं है।
सूनी-सूनी मेरी, ज़िन्दगानी रहेगी,
जब मेरा साथ तुझको, गवारा नहीं है।।

जब मद्धम गति से हवा चल रही थी।
तू कहीं दूर रहकर, मुझे छल रही थी।
हवा आ गई, आंधियों में बदलकर,
वो दीपक बुझाने, जो जल रही थी।।

आंधियों से मैं डर कर, नहीं छुप रहा हूँ।
चला जा रहा हूँ, नहीं रुक रहा हूँ।
समझना नहीं कि, मैं हारा हुआ हूँ,
तेरी शान में बस, मैं झुक रहा हूँ।।
कभी जल रहा हूँ, कभी बुझ रहा हूँ।।

कुमार सौरभ

वरि.लेखापरीक्षक

ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन

सुश्री अश्वती एस
ब.क.क

पृथ्वी एकमात्र ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन मौजूद है, अब खतरे में है । इसका मुख्य कारण मानव द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग है । अंतरराष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन पैनल (आई.पी.सी.सी.) की रिपोर्ट के अनुसार, अगर ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन की दर वर्तमान के अनुसार जारी रही, तो ग्लोबल वार्मिंग 2030 से 2052 के बीच 1.5 डिग्री सेल्सियस को पार कर जाएगी ।

मानवीय गतिविधियों के कारण उत्पन्न ग्रीनहाउस गैसों के प्रभावस्वरूप पृथ्वी के दीर्घकालिक औसत तापमान में हुई वृद्धि को वैश्विक तापन या ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है । ग्रीनहाउस गैसें पृथ्वी से बाहर जाने वाले ताप अर्थात् दीर्घतरंगीय विकिरण को अवशोषित कर पृथ्वी के तापमान को बढ़ा देती हैं, इस प्रक्रिया को 'ग्रीन हाउस प्रभाव' कहते हैं । ग्रीन हाउस गैसों में मुख्यत: कार्बन डाईऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरो कार्बन, ओज़ोन, हाईड्रोफ्लूरो कार्बन, जल वाष्प आदि गैसें शामिल हैं । ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन मुख्यत: जीवाश्म ईंधनों के दहन, उद्योगों, मोटर वाहनों, धान के खेतों, पशुओं की चराई, रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर, प्लास्टिक का जलना, वनों की कटाई आदि से होता है ।

ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप, बढ़ती गर्मी का 80% से अधिक हिस्सा महासागरों द्वारा अवशोषित किया जाता है । परिणामत: समुद्रीय जल लगभग 3000 मीटर की गहराई तक गरम हो जाता है। समुद्र जल की गर्मी जलस्तर के विस्तार का कारण बनती है और समुद्रीय जलस्तर बढ़ जाता है । यह ध्रुवों पर बर्फ और ग्लेशियरों के पिघलने के कारण भी बन जाता है । ग्लोबल वार्मिंग से वर्षा, हवा और मिट्टी तथा पानी की लवणता जैसे जलवायु में व्यापक परिवर्तन हो जाते हैं । इसके अलावा गर्म लू, बाढ़, जलस्तर में वृद्धि, असमय भारी वर्षा आदि आशंकाप्रद परिवर्तन मौसम चक्र को भी प्रभावित करते हैं । जलवायु में हो रही अस्थिरता कृषि को बुरी तरह से प्रभावित करती है और समुद्र तल में बढ़ाव समुद्र के किनारे रहने वालों के आवास स्थान को भी नष्ट कर देता है ।

उद्भव स्थान के ग्लेशियर तीव्रता से पिघलने के कारण गंगा सहित अन्य महा नदियों के अस्तित्व पर भी खतरा मंडरा रहा है । अंटार्कटिका के चौथे सबसे बड़े हिमखंड 'लार्सन सी' के विघटन से पर्यावरण संबंधी गंभीर समस्याएं पैदा हो सकती हैं । ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव में उत्तरी यूरोप में सूखा, अमेरिका और कनाडा में जंगल की आग, चीन में भीषण सूखा और गर्मी और आर्कटिक में

बर्फ का पिघलना शामिल है।

1992 में पृथ्वी सम्मेलन में पहली बार ग्लोबल वार्मिंग के मुद्दे की गंभीरता से समीक्षा की गई। इस सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन पर चर्चा के बाद कई निर्णय लिए गए, लेकिन इनमें से कोई भी लागू नहीं किया गया। इसके बाद 2005 में जापान के क्योटो में आयोजित एक बैठक में 'क्योटो प्रोटोकॉल' की घोषणा की गई थी। इस समझौते के तहत, 85 औद्योगिक देशों ने ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा 1990 की तुलना में 5.2 प्रतिशत तक कम करने का निर्णय लिया था। 169 देशों ने संधि की पुष्टि की लेकिन विभिन्न देशों द्वारा राय में अंतर के कारण यह समझौता वांछित परिणाम देने में विफल रहा।

यह समझौता मुख्य रूप से ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 डिग्री तक नियंत्रित रखने के उद्देश्य से किया गया था। इसकी एक शर्त यह थी कि विकासशील देशों को ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए विकसित राष्ट्रों द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाए।

रिपोर्ट में कहा गया है कि पेरिस समझौते का लक्ष्य विश्व तापमान को बढ़ने से 1.5 डिग्री तक सीमित रखना मुश्किल है पर असंभव नहीं है। यह लक्ष्य वायुमंडल से कार्बन डाईऑक्साइड को हटाए बिना प्राप्त नहीं हो सकता। रिपोर्ट में वनों के संरक्षण और वृक्षारोपण, कार्बन उत्सर्जन कम करने और नई प्रौद्योगिकियों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की सिफ़ारिश की गई है।

काटोविस, पोलैंड में 2019 में आयोजित जलवायु परिवर्तन सम्मेलन ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता को इंगित करता है। ऐसी स्थिति में, अमेरिका और ब्राज़ील जैसे देश पेरिस समझौते के खिलाफ काम कर रहे हैं और नीतियां बना रहे हैं। इसलिए पेरिस समझौते में भागीदार के रूप में भारत की प्रासंगिकता एवं ज़िम्मेदारी बढ़ गई है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 48 ए और 51 ए पर्यावरण संरक्षण के महत्व को दर्शाते हैं।

भारतीय वैज्ञानिकों ने समुद्र के पानी में आयरन सल्फेट का छिड़काव कर शैवाल के विकास को नियंत्रित करके कार्बन डाईऑक्साइड के स्तर को कम करने के लिए 'लोहाफेक्स' नामक योजना तैयार की है। इसके अलावा ग्रीनहाउस गैसों के उपयोग को कम करने के लिए कार्बन करों को लगाने से ग्लोबल वार्मिंग पर अंकुश लगाया जा सकता है। सार्वजनिक परिवहन सुविधाओं का उपयोग, बिजली का सावधानीपूर्वक उपयोग, जागरुकता कार्यक्रम और वनीकरण कुछ हद तक ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित कर सकते हैं। जर्मन मौसम विभाग के अनुसार खाने को बर्बाद न करके कार्बन उत्सर्जन में 14 प्रतिशत तक की कमी लाई जा सकती है।

पिछली बार आयोजित संयुक्त राष्ट्र के जलवायु सम्मेलन में 43 फैशन कंपनियों ने अपने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को 30 प्रतिशत तक कम करने की सहमति व्यक्त की। इसी तरह अगर सभी ने मिलकर ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की कोशिश की तो ग्लोबल वार्मिंग पर अंकुश लगाया जा सकता है। गांधीजी ने एक बार बताया था कि दुनिया में इंसान की ज़रूरत के लिए काफी है पर लालच के लिए नहीं। इसलिए हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जितना हम लौटा सकें। धरती केवल हमारा ही नहीं अन्य प्राणियों का भी आवास स्थान है, हमें इसकी देखभाल करनी चाहिए नहीं तो धरती से जीवन का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। ना जाने कितनी ही वन्य जीव प्रजातियाँ लुप्त हो चुकी हैं और कितनी ही लुप्त होने के कगार पर हैं। उन्हें और अपने ग्रह को बचाना हमारे हाथ में है।

जे.आर. मालविका सुपुत्री श्रीमती राखी पी.ओ द्वारा बनाया गया रेखा चित्र

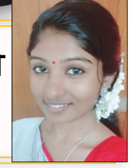

"बोनसायी"

श्रीमती उषा बर्टी
व. लेखापरीक्षा अधिकारी

हूँ मैं एक छोटा सा,
दिखने में प्यारा सा,
मन मोहने वाला,
निराला, सुंदर सा पौधा ।1।
आते जाते सभी,
करते हैं प्रशंसा मेरी,
देखते हैं सभी, मेरा रूप बाहरी,
झाँक के अंदर देखता न कोई ।2।
दुख बहुत होता है मुझे,
दर्द बहुत होता है मुझे,
मेरे बढ़ते शिखरों को काट के,
मुझे बौना कर, रखा है इस गमले में ।3।
जब भी फैलने की
मैं करता हूँ कोशिश,
बेरहमी से काट दिया जाता है,
मेरी अंकुरती हर नई जड़ को ।4।
पेड़ हूँ मैं, मुझे प्रकाश मिलने दो,
मेरी जड़ों को पानी की तलाश में,
दूर-दूर तक फैलने दो,
मुझे आसमान तक बढ़ने दो ।5।
यही मेरी दबी तमन्ना है,
यही मेरे दिल की आशा है ।।

कुएं का रहस्य

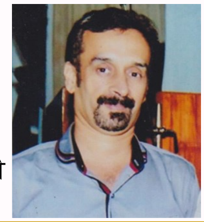

साई कुमार जे.ए,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सुबह हो गई थी। हनुमंत के नाना सुबह की सैर पर निकले। नानी गायों को चारा डालने में व्यस्त थी। चादर हनुमंत के हाथ में है, किसी के उसके पास आकर बात करने तक वह उसे नहीं छोड़ेगा। हनुमंत के दूसरी मंज़िल के कमरे की खिड़की से सारा नहीं तो कम से कम आधा गांव दिखता है। बड़बड़ाते हुए काम वाली लक्ष्मी आ गई। लक्ष्मी ने हनुमंत को बिस्तर से नीचे उतरने के लिए ज़ोर दिया। पर हनुमंत नहीं माना। उसने हनुमंत को समझा के और बहला के उतारने की कोशिश की पर हनुमंत ज़िद करने लगा और नीचे नहीं उतरा। हनुमंत खिड़की से इधर-उधर देख रहा था और ढूंढ रहा था पर नानी कहीं नज़र नहीं आई। कुछ देर बाद नानी को हनुमंत-हनुमंत कहते हुए सुना। नानी के पलंग के पास आते ही वह नानी के ऊपर कूद पड़ा। नानी के लिए यह कोई नई बात नहीं थी। रोज़ का सिलसिला था। दो घड़ी के लिए प्यारी-प्यारी और मीठी-मीठी बातें करने के बाद हनुमंत और नानी नीचे चले गए।

हनुमंत के माता-पिता 70 कोस दूर स्थित नगर में नौकरी करते हैं। शुक्रवार सूरज ढलने के बाद आते और सोमवार सुबह चले जाते। हनुमंत के लिए माता-पिता का प्यार और मिलना सिर्फ दो दिन के लिए होता था। बाकी के दिन वह अपने नाना-नानी के साथ गुज़ार लेता है। अभी पाँच साल का ही तो है हनुमंत !

हनुमंत उतना शरारती नहीं है जितना कुंदबुद्धि। आधा दिन घर की मुर्गियों को भगाने में और चिड़ियों को छेड़ने में गुज़ार देता। इस तरह खेलते खेलते दिन ढल जाता है। शाम होते ही हनुमंत दूसरी मंज़िल की ओर दौड़ पड़ता। सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते सांस भी चढ़ने लगती। उसे खिड़की से उसी नज़ारे के दिखने का इंतज़ार है। हनुमंत का मन उतावला हो रहा था। एक-एक घड़ी बड़ी मुश्किल से काट रहा था। सर्दियों का मौसम था फिर भी हनुमंत के माथे से पसीना छूट रहा था।

इंतज़ार की घड़ी ख़त्म हुई। बेचैनी चली गई। वही औरत, वही मिट्टी का घड़ा। वही सिर पर ओढ़ा हुआ दुपट्टा। रोज़ की तरह टूटे हुए घड़े से पानी भर रही थी। जैसे जैसे वह पानी भर रही थी वैसे वैसे टूटे हुए घड़े से पानी बहता जा रहा था। हनुमंत के दिमाग में एक ही संदेह, क्यों यह औरत टूटे हुए घड़े से पानी भर रही थी। क्यों उसका ध्यान बहते हुए पानी पर नहीं जा रहा था। उसमें विचित्र उत्साह था यह जानने के लिए। रोज़ का किस्सा था यह। पर हनुमंत हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। हनुमंत ने निर्णय लिया कि वह उस औरत को कुएं के पास जाकर सूचित करेगा। हनुमंत सबकी नज़र बचा कर सीढ़ियां उतर कर कुएं की ओर चल पड़ा। बीच-बीच में पीछे मुड़कर देख रहा था और आगे बढ़ रहा था। कुएं से पानी भरती औरत सामने ही दिख रही थी। अब हनुमंत की बेचैनी और ज़्यादा बढ़ गई। वह जल्दी-जल्दी चलने लगा फिर भी कुछ दूरी बाकी थी। हनुमंत चलता रहा, चलता रहा। वह औरत और कुंआ उतनी ही दूर नज़र आ रहे थे जितने घर से थे।

अचानक ! घर के पास वाले मंदिर की घंटी बजने लगी। एकदम से हनुमंत पीछे मुडकर मंदिर की तरफ़ देखने लगा। वह मंदिर की ओर चल पड़ा। हनुमंत पहले से ही मंदिर में होने वाले हनुमान चालीसा के पाठ से प्रभावित था और मंदिर में मिलने वाले प्रसाद से भी। वापस कुएं की ओर देखा तो वहां ना कोई कुंआ था ना ही कोई औरत !! हनुमंत उसे आस-पास खोजने लगा कि अभी तो दिख रहे थे अब कहां चले गए।

हनुमंत के दिल की धड़कन बढ़ गई और वह बहुत डर गया। हनुमंत का डर उसे मंदिर की ओर खींचने लगा और वह मंदिर की ओर दौड़ पड़ा। हांफते-हांफते वह मंदिर के भीतर गया और फिर से कुंआ और औरत देखने की कोशिश करने लगा।

इसी बीच पुजारी जी ने हनुमंत के माथे पर हनुमान जी का तिलक लगाया व प्रसाद दिया। वह प्रसाद खाते-खाते एक ओर चला गया जहां कुछ लोग खड़े आपस में बात कर रहे थे। कौतूहलवश वह उनकी बात सुनने लगा। वे आपस में किसी अफ़वाह की बात कर रहे थे कि इमली के पेड़ के पास वाले कुएं पर कोई औरत पानी लेते वक़्त हादसे का शिकार हो कर मर चुकी है। सुना है अब भी वह लोगों को कुएं से पानी भरती दिखाई देती है। वे बोल रहे थे कि सब को उस कुएं के पास जाने से मना किया गया है।

किरणदीप कौर
क. हिंदी अनुवादक

भारतीय रेलवे 1853 से अब तक

भारत में पहली ट्रेन 1853 में चलाई गई जिसमें 400 लोगों ने मुंबई से थाने तक 1.6 कि.मी का सफ़र तय किया था। समय के अनुरूप रेलवे का विस्तार होता चला गया। तब से अब तक रेलवे ने एक लंबा सफ़र तय किया है और विश्व की सबसे बड़ी रेलवे प्रणालियों में स्थान ग्रहण किया है। हाल ही में भारत सरकार की महत्वकांक्षी 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत इंजन रहित 'वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन' को प्रधान मंत्री जी ने 15 फरवरी 2019 को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया था। शीघ्र ही और भी स्टेशनों पर इसी प्रकार की ट्रेनें शुरु की जाएंगी। यह ट्रेन पूरी तरह से वातानुकूलित और जी पी एस प्रणाली से युक्त है। यात्रियों को ट्रेन की गति का पता चलता रहेगा। इसमें वाई-फ़ाई और इंटरनेट की सुविधा भी उपलब्ध है। ट्रेन को इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि यात्री चालक के केबिन का नज़ारा भी देख सकते हैं। विमान के जैसे ही सुविधाजनक शौचालय इसमें बनाए गए हैं।

2009-10 से 2014-15 तक पिछले 6 वर्षों में भारत में कुल 803 रेल दुर्घटनाएं हुईं जिनमें 620 लोग मारे गए और 1855 लोग घायल हुए। इनमें से 45% दुर्घटनाएं ट्रेन के पटरी से उतर जाने के कारण हुईं। आँकड़ों को देखें तो 43.5% दुर्घटनाएं फाटक पर लाइन मैन के ना होने या लापरवाही से रेल ट्रैक पार करते समय हुई, अन्य 4.7% टक्कर, 3.6% आग संबंधी और 1.7% विविध कारणों से हुई।

मामलों का अध्ययन करने पर पाया गया कि पिछले 20-30 वर्षों से भारतीय रेलवे अपनी क्षमता से 15 गुना अधिक यात्रियों को ले जा रही है। सीमा से अधिक भार से ट्रैक को क्षति पहुँच रही है। अधिकतर ट्रेनें आग का पता लगाने वाली प्रणाली और फायर अलार्म से लैस नहीं हैं। भारतीय रेलवे के पास आधुनिक तकनीक का अभाव है इसलिए मानवीय चूक की संभावना बढ़ जाती है। भारतीय रेलवे प्रणाली अभी भी हस्तचालित प्रणाली (मैनुअल सिग्नल सिस्टम) पर निर्भर है। हादसे कर्मचारियों की कम संख्या और ट्रेन ड्राइवर की गलती तथा लापरवाही से भी होते हैं। भारत में 50,000 रेलवे फाटकों में से 15,000 बिना किसी लाइनमैन के काम करते हैं। ऐसे फाटकों पर यात्री लापरवाही से ट्रैक पार करते हैं। सिग्नल लाल होने पर भी फाटक पार करते हैं जिससे दुर्घटनाएं होती हैं। निरंतर बढ़ती जा रही यात्रियों की संख्या के कारण रेलवे को ट्रेनों की मरम्मत और रखरखाव तथा नयी प्रणाली को लागू करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। ट्रैकों की मरम्मत के लिए रेल यातायात रोकना पड़ता है जिससे यात्रियों को असुविधा होगी। भारत में माल की ढुलाई के लिए व्यापारी वर्ग मालगाड़ियों पर निर्भर है और माल लाने ले जाने का यह सस्ता साधन है। रेलवे के लिए भी यह कमाई का साधन है। यात्री ट्रेनों के साथ-साथ उन्हीं ट्रैकों पर मालगाड़ियां भी निरंतर आवागमन करती हैं जिस कारण रेलवे को ऐसे ही काम करना पड़ता है। जब विशेषज्ञों की राय को अनसुना कर दिया जाता है विशेषकर इंजीनियर जो ट्रेन की स्थिति और ट्रैक के हालातों से भली भांति परिचित हैं, दुर्घटनाएं होती हैं।

बजट के अभाव के कारण पुरानी बोगियों को हटाया नहीं जाता अपितु उनसे तब तक काम लिया जाता है जब तक वे खस्ता हालत में ना पहुँच जाएं। विशेषकर त्योहारों के दिनों में लोग ट्रेन की टिकट ना मिलने पर छतों पर अपनी जान जोखिम में डाल कर यात्रा करते हैं। रेलवे लाइनों से घर, दुकानें किसी भी तरह की इमारत पर्याप्त दूरी पर होनी चाहिए और ट्रैक के पास किसी भी तरह के उत्सव, समागम या रैली इत्यादि से बचना चाहिए।

'स्वच्छ भारत मिशन' के अधीन ट्रेनों में बायो टॉयलेट्स जैसी सुविधाएं शुरु की गई हैं ताकि रेलवे ट्रैक पर मनुष्यों द्वारा मल साफ करने की प्रक्रिया (ह्यूमन स्कैवेनज़िंग) पूरी तरह बंद हो सके। बड़े स्टेशनों पर भी आपातकालीन चिकित्सीय हालातों से निपटने के

लिए बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं। यदि सफर के दौरान किसी की अचानक तबीयत खराब हो जाए तो ऐसे हालातों में रेलवे द्वारा क्या कदम उठाने चाहिए तथा ट्रेन में कर्मचारी प्राथमिक चिकित्सा देने में कितने सक्षम हैं। आपातकालीन डाक्टरी सहायता की आवश्यकता किसी को भी पड़ सकती है। आज भारत में बुलेट ट्रेन चलाने की बात की जाती है पर क्या रेलवे ट्रैक इसके लिए सक्षम हैं? जब तक बुनियादी ढाँचा (इंफ्रास्ट्रक्चर) नहीं सुधारा जाता रेलवे की चुनौतियां कम नहीं हो सकती। दूसरे देशों से तकनीक का आयात किया जा सकता है बुनियादी ढाँचे का नहीं।

भारतीय रेल देश का बड़ा उपक्रम है। कितने लोगों को इससे रोज़गार मिलता है। फिर भी रेलवे के पास कर्मचारियों की कमी हमारे सिस्टम की असफलता को दर्शाती है। 2017 की एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय रेलवे 70,000 गेट मैन, की मैन, गैंगमैन, सिग्नल कर्मचारी आदि जो ट्रैक की सुरक्षा हेतु अति आवश्यक हैं, की कमी से जूझ रही है। वर्ष 2019-20 के लिए भारतीय रेलवे ने विभिन्न पदों हेतु 1,53,003 रिक्तियों को भरने के लिए सूचना जारी की है। हर वर्ष कितने लोग सेवानिवृत्त होते हैं पर सभी पद भरे नहीं जाते। कर्मचारियों को 14 घंटे तक भी काम करना पड़ता है। प्रत्येक वर्ष रेल बजट में नयी गाड़ियां चलाने का ऐलान किया जाता है। जहां कोई ट्रेन सप्ताह में दो बार चलाई जाती थी अब उसे चार बार चलाया जा रहा है और हर वर्ष ट्रेनों की समय-सारणी में यह बढ़ोतरी देखी जाती है। बिना टिकट यात्रा करने वालों के कारण रेलवे को प्रति वर्ष करोड़ों रुपये का नुकसान उठाना पड़ता है। किसी भी प्रकार के बंद, धरना-प्रदर्शन, हड़ताल आदि में ट्रेनों का चक्काजाम किया जाता है, पटरियों को विस्फोट से ध्वस्त कर दिया जाता है, बोगियों में आग लगा दी जाती है। प्रतिवर्ष हज़ारों करोड़ का रेल बजट पेश किया जाता है फिर भी रेलवे को घाटा उठाना पड़ता है। विभिन्न समितियों ने इस कमी को अपनी रिपोर्टों में उठाया है।

समस्याएं हैं तो समाधान भी हैं। रेलवे को अपने निवेश और मुनाफ़े को बढ़ाने के लिए नयी परियोजनाएं लानी होंगी। पर्यटन इसमें अहम भूमिका निभा सकता है। जैसे राजस्थान सरकार द्वारा 'पैलेस ऑन व्हील्स' की शुरुआत की गई जो किसी सात सितारा होटल से कम नहीं है। अन्य ऐश्वर्य संपन्न ट्रेनों में 'महाराजा एक्सप्रैस', 'डेक्कन ओडिसी' और 'गोल्डन चैरियेट' आदि हैं। रेलवे पर्यटकों के लिए क्रूज़ के समान ही छुट्टियों के दौरान आकर्षक टूर पैकेज का प्रबंध भी कर सकती है। इसके लिए पर्यटक स्थलों के होटल व्यवसायी आदि से भागीदारी की जा सकती है। जैसे एयरलाइंस क्रेडिट कार्ड से टिकट बुक करने पर आकर्षक छूट तथा लुभावने पैकेज देती हैं वैसी ही रेलवे भी इस संबंध में योजनाएं लागू कर सकती है। डीज़ल इंजन की बजाए इलेक्ट्रिक इंजन लाने चाहिए जिससे तेल की खपत कम होगी और वायु प्रदूषण में भी कमी आएगी। इस क्षेत्र में भी बायो ईंधन अच्छा विकल्प हो सकता है।

मालगाड़ियों को अपनी समय-सारणी का पाबंद होना होगा तो मालभाड़े में वृद्धि होगी क्योंकि माल लाने-जाने में होने वाली देरी के कारण व्यापारी सड़क यातायात को प्राथमिकता देते हैं। रेलवे द्वारा यात्रियों को दी जाने वाली सुविधाओं को और बेहतर बनाना होगा। विशेषकर भोजन और साफ-सफाई के क्षेत्र में। अक्सर ही हमें देखने को मिलता है कि ट्रेनों में परोसा जाने वाला खाना सफाई का ध्यान रखे बिना बनाया जाता है। समय-समय पर पीने के पानी और ट्रेनों में खाना सप्लाई करने वाली एजंसियों की जांच होनी चाहिए। कमियां पाए जाने पर लाइसेंस रद्द किया जाना चाहिए। ट्रेनों के सभी कोचों में नहीं तो कुछ में जैसे ड्राइवर केबिन, रसोई इत्यादि में सी सी टी वी कैमरे लगे होने चाहिए। यात्रियों द्वारा कचरा पात्र के अलावा ट्रेन में गंदगी फैलाने पर भारी जुर्माना वसूल किया जाए। विदेशी तकनीक की बजाए स्वदेश में ही नई तकनीक विकसित की जाए। खाली पदों को यथा संभव भरा जाए और कर्मचारियों को उचित प्रशिक्षण दिया जाए। 'कुशल भारत' तथा अन्य ऐसी पहल के चलते युवाओं को

अधिक अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। पुराने ट्रेकों की मरम्मत पर बल दिया जाए। रेलवे को समय-समय पर 'आटो एक्सपो' के समान साधारण लोगों के देखने के लिए प्रदर्शनी आदि का आयोजन करवाना चाहिए। रेल बोगी को डिज़ाइन करते समय दिव्यांगों और वृद्धों के लिए शौचालय और चढ़ने उतरने में होने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखना चाहिए। ट्रेनों की संख्या बढ़ाने की बजाए पहले से चलती ट्रेनों के रखरखाव पर ध्यान दिया जाए। पुरानी बोगियों का नवीकरण करके उन्हें आकर्षक रेस्तरां, प्रतीक्षा कक्ष, डिस्पेंसरी इत्यादि में तब्दील किया जा सकता है।

यात्रीगण कृपया ध्यान दें..... 1853 से भारतीय रेलवे इस देश के करोड़ों लोगों और पर्यटकों की निरंतर सेवा कर रही है। यह विश्व की चौथी सबसे बड़ी रेलवे प्रणाली है। अपने आरंभ से अब तक भारतीय रेलवे ने समय के बहुत से परिवर्तन और उतार चढ़ाव देखे हैं। डाक-तार सेवा से लेकर इंटरनेट और वाई-फ़ाई तक, कोयले वाले इंजन से इलेक्ट्रिक इंजन तक, सीढियों से लेकर एलीवेटर तक, मालगाड़ी से मैट्रो तक, प्लेटफार्म पर मिलने वाले पकौड़ों से पेपरानी पिज़्ज़ा तक, टिकट आरक्षण करवाने की लंबी कतारों से लेकर ऑनलाइन टिकट बुक करने तक। भारतीय रेलवे अपनी सेवाओं को और भी बेहतर करने के लिए प्रतिबद्ध है। रेलवे के इस प्रयास में सभी अपना योगदान दें। ताकि ट्रेन में सफ़र करते समय अच्छी यादें साथ घर ले जा सकें।

शुभम रैक्वार

आशुलिपिक

मेरी पहली आधिकारिक यात्रा

एक दिन कार्यालय में कामकाज के दौरान हिंदी अनुभाग से एक परिपत्र आया जिसमें हिंदी प्रशिक्षणार्थ 5 दिवसीय गहन हिंदी कार्यशाला हेतु, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आवेदन मांगे गए थे। मैंने आवेदन दिया और सौभाग्य से मुझे नामांकित किया गया। मुझे प्रशिक्षण की समय-सारणी 06 मई से 10 मई 2019 दी गई। मई के महीने में मेरे प्रथम कार्यस्थल (केरला) का मौसम बहुत सुहावना होता है जबकि उत्तर भारत में इस समय बहुत ही तेज़ धूप के साथ लू चलती है। एक पल तो लगा कि मुझे अपना नामांकन रद्द करवा देना चाहिए पर फिर लगा कि इससे पहले कभी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली जाने का मौका नहीं मिला। मैंने प्रशिक्षण के लिए जाने का निश्चय किया और अपना टिकट राजधानी एक्सप्रेस में बुक किया तथा दिल्ली रवाना हुआ।

केरला से जाते समय समुद्र के किनारे कोंकण रेलवे से कई राज्यों को छू कर निकलना एक बहुत ही उम्दा अनुभव था। हर उस स्टेशन पर जहां राजधानी रुकती उस राज्य विशेष की संस्कृति, खान-पान, पहनावा और भाषा एवं बोली की अनोखी झलक मिलती है। इस तरह मैं राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली मेरे पहले प्रशिक्षार्थ पहुँचा और अपने होटल पहुँचकर आराम किया। उसी दिन शाम को मैं लोटस टेम्पल गया और अगले दिन सुबह पूरे जोश के साथ प्रशिक्षण के लिए संस्थान पहुँचा। संस्थान की निदेशक महोदया के स्वागत भाषण ने राजभाषा हिंदी सीखने और राजभाषा में काम करने के लिए एक अलग ही रूचि को जन्म दिया। स्वागत भाषण के बाद हमारा देश के भिन्न-भिन्न स्थानों से और विभिन्न कार्यालयों से आए प्रशिक्षार्थियों से परिचय हुआ। परिचय के दौरान मुझे एहसास हुआ कि प्रशिक्षण संस्थान में ही एक लघु भारत की रचना हो गई। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और अरुणाचल प्रदेश से लेकर गुजरात तक, चारों दिशाओं से भिन्न-भिन्न कार्यालयों के कर्मचारीगण प्रशिक्षणार्थ आए हुए थे।

हमारे पहले दिन के प्रशिक्षण के दौरान हमें अगले 5 दिनों तक चलने वाले प्रशिक्षण का कार्यक्रम मिला तो मैं यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ कि हमारा पूरा प्रशिक्षण शिक्षिकाओं द्वारा किया जाएगा। हम सब प्रशिक्षणार्थियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि मातृभाषा का प्रशिक्षण वो भी मातृत्व भाव के साथ मिलना बहुत खुशी की बात है। प्रशिक्षण के पहले दिन ऐसा लगा कि आज फिर अपने बचपन के स्कूल में एक अबोध बालक की तरह कक्षा में बैठा हूँ और हर पल कुछ नया सीखने को आतुर हूँ।

इस तरह प्रशिक्षण के दौरान प्रतिदिन एक अलग ही उत्साह होता था कि आज फिर मुझे कुछ नया सीखने को मिलेगा। शाम के समय मैंने हिंदी भाषा में काम करने के तरीके को सीखा और हिंदी भाषा को जानने की कोशिश की। प्रतिदिन शाम को प्रशिक्षण के पश्चात दिल्ली में प्रसिद्ध जगहों जैसे इंडिया गेट, राष्ट्रीय संग्रहालय, राष्ट्रीय स्मारक, लाल किला, लोटस टेम्पल, चांदनी चौक, अक्षरधाम आदि स्थानों पर घूमा। इस तरह प्रशिक्षण के अंत तक हम सब प्रशिक्षुओं और प्रक्षिकाओं के बीच एक रिश्ता सा बन गया था। प्रशिक्षण के दौरान कुछ नए दोस्त बने और इस तरह प्रशिक्षण के अंतिम दिन शाम को नम आँखों से हम सबने एक दूसरे से विदा ली और अपने-अपने कार्यालयों के लिए चल पड़े। इन 5 दिनों के प्रशिक्षण में ऐसा लगा मानो मैं वर्षों से राष्ट्रीय राजधानी में रह रहा हूँ।

ज़िंदगी का राज़

जोशुआ जोन
सुपुत्र श्रीमती उषा बर्टी
व. लेखापरीक्षा अधिकारी

ज़िंदगी है एक अनमोल तोहफ़ा
जिसकी कीमत कोई लगा नहीं सकता
पर समझदारी से जीना हर पल
ज़िंदगी है एक सुंदर सपना
मुफ़्त में ले लो आनंद इसका
मगर कोशिश से करना हर तमन्ना पूरी
ज़िंदगी है एक बड़ी चुनौती
कठिन रास्ते और फिसलन भरी
सावधानी से रखना है हर कदम
ज़िंदगी है एक विस्मय भरी बाज़ी
जहां जीत और हार है शामिल
हिम्मत ना हारकर आगे बढ़ना है निडर
ज़िंदगी है खुदा की अमानत
आभार और संतोष से रहो
उदास ना होकर उमंग से जीना सीखो

कुदरत

विस्मया एस एस
सुपुत्री षाजी वी एस,
लेखापरीक्षक

हे भगवान, तेरा यह सृजन
कितना है सुंदर
कितने हैं रंग यहां पर
कोई कहता गुलाबी तो कोई बेंगनी
तो कोई है कहलाता लाल
तपती गर्मी में तू बहाती शीतल हवा
फ़ूलों में भरती है खुशबू
कहीं भंवरों के है गुंजन
तो कहीं तितलियों की हंसी
खुश हूँ मैं बहुत, आप के चरणों में
हे ईश्वर, तेरा यह सृजन कितना है अनोखा।

भगवान और इंसान

कैलाश मीणा

डी ई ओ

आज का इंसान, जैसे भ्रष्टाचार कुकर्मों की खान।

अपने स्वार्थों के लिए ले रहा, न जाने कितने बेकसूरों की जान।

इतना कुछ होने पर भी क्यों चुप हैं भगवान?

एक बार सपने में मिल गए भगवान।

दर्शन के बाद किए कई प्रश्न।

क्यों बनाए थे इंसान अगर नहीं चला सकते थे जहान।

मुस्कुराते हुए बोले फिर भगवान।

प्रश्न भी तुम इंसान और उत्तर भी तुम इंसान।

कभी नहीं हो सकता ये संसार एक समान।

मैं आया तब जब शैतान था अति बलवान।

जिन्होंने गुलाम किया हिंदुस्तान क्या थी उनकी पहचान।

किसने आज़ाद कराया जब गुलाम था हिंदुस्तान।

इतनी जल्दी भूल गए भगत सिंह जैसे शहीदों का बलिदान।

बच्चे से बुजुर्गों तक सबको है शैतान की पहचान।

मरने वाला भी इंसान और मारने वाला भी इंसान।

शैतान भी आम इंसान, फिर क्यों कुछ नहीं करता इंसान।

बम विस्फोट, भूकंप जैसे हादसों में मर रहा।

देश और मानवता के लिए कोई क्यों नहीं देता अपनी जान।

सब कुछ करेगा भगवान तो फिर क्यों है इंसान।

केवल अपने स्वार्थों के लिए जीना है पापियों की पहचान।

देश और मानवता के लिए कर अपने प्राणों का बलिदान।

नहीं तो तू भी होगा किसी दिन बम विस्फोट, भूकंप जैसे हादसों की पहचान।

इतना बोल कर भगवान हो गए अंतर्ध्यान।

आँख खुली तो देखा, यह सब था एक दिवास्वप्न।

मैं भी औरों की तरह हरामखोर, स्वार्थी और कायर इंसान।

सपना मान कर भूल गया अपने प्रश्न का समाधान।

'हिन्दी' शब्द मूलतः फ़ारसी का है न कि हिन्दी भाषा का।

हिन्दू से हिन्द बना और फिर' हिन्द' में फ़ारसी भाषा के सम्बन्ध कारक प्रत्यय 'ई' लगने से 'हिन्दी' बन गया।

'हिन्दी' शब्द का विकास कई चरणों में हुआ- सिंधु हिन्दु हिन्द+ई हिन्दी।

हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है। संस्कृत पाली, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुंचती है। फिर अपभ्रंश,अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन/प्रारम्भिक हिन्दी का रूप लेती है।

'हिन्दी' शब्द के दो अर्थ हैं-'हिन्द देश के निवासी' (यथा-हिंदी हैं हम,वतन है हिन्दोस्तां हमारा-इकबाल) और 'हिन्दी की भाषा'।

हिन्दी शब्द की व्युपत्ति भारत के उत्तर-पश्चिम में प्रवाहमान सिंधु नदी से सम्बन्धित है।

हिन्दी विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में से एक है।

दुनिया के 80 करोड़ लोग जानते हैं हिन्दी।

भारत की राजभाषा हिन्दी दुनिया में दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।

बहुभाषी भारत के हिन्दी भाषी राज्यों की आबादी 46 करोड़ से अधिक है।

2011 की जनगणना के मुताबिक भारत की 1.2 अरब आबादी में से 41.03 फीसदी की मातृभाषा हिन्दी है।

हिन्दी को दूसरी भाषा के तौर पर इस्तेमाल करने वाले अन्य भारतीयों को मिला लिया जाए तो देश के लगभग 75 प्रतिशत लोग हिन्दी बोल सकते हैं।

भारत के इन 75 प्रतिशत हिन्दी भाषियों सहित पूरी दुनिया में तकरीबन 80 करोड़ लोग ऐसे हैं जो इसे बोल या समझ सकते हैं।

भारत के अलावा इसे नेपाल,मॉरिशस,फिजी,सूरीनाम,युगांडा,दक्षिण अफ्रीका,कैरिबियन देशों, ट्रिनिडाड एवं टोबेगो और कनाडा आदि में बोलने वालों की अच्छी खासी संख्या है।

हिन्दी सिर्फ एक भाषा भर नहीं है। हिन्दी तो एक संस्कृति बन चुकी है।

देश की आन बान और शान है हिन्दी। हिंदुस्तान की पहचान है हिन्दी।

अगर हिंदुस्तान को जानना है तो आपको हिन्दी को जानना होगा।

(स्रोत- इंटरनेट)

खामोश नहीं रे अपनी ये कुदरत

विजेष वी
लेखापरीक्षक

अब हम हैं दुख और चिंता में
क्यों, जानते हो ?
धरती पर बारिश और आँधियों का
हुँकार सा चल रहा है।
कितने प्राण स्वर्ग सिधारे,
खो गये अपनों के घर-बार
ढूँढ-ढूँढ कर थक गए सारे।
हे भगवान ! क्या हो रहा है
हमारी कुदरत को।
डरते हैं सभी, रो रहे हैं
अपने प्यारों की याद में।
एक अजीब सा बदलाव दिखता है।
क्यों, जानते हो ?
बर्बाद कर डाला है मानव ने
अपनी कुदरत के अस्तित्व को
हे प्यारों, बचाओ अपने वातावरण को
बचाओ अपनी कुदरत को
वरना रोएंगे उम्र भर
किसी को बचा ना पाएंगे।

यादें

ए.एन.गोविंद
सुपुत्र जी.सी.नारायणन पोट्टी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जब भी मनुष्य को अकेलेपन का एहसास हो
या मनुष्य को दु:ख महसूस हो
या वह कोई कठिन परिस्थिति में हो
इन सभी उलझनों का एक ही सुलझन है
ये कोई बड़ी चीज़ नहीं है
ये ना अंगूर की पुत्री शराब है
ना तंबाकू का मायाजाल है
इससे न नशा होता है
ना ही ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है
ये हमारे रिश्तेदार नहीं है
पक्के मित्र ज़रूर है
धोखेबाज़ हरगिज़ नहीं हैं
ये और कुछ नहीं हमारी अपनी यादें है
यादों के बारे में क्या कहें
जो भी कहें वो कम है
यादों का ज़िन्दगी में होना वरदान है
जिसके पास सबसे ज़्यादा यादें हो
वो भाग्यवान है।
मोहब्बत का नशा भी कम लगता है
जब यादों का मज़ा चढ़ता है
अभी और कुछ नहीं कहना है यारों
एक ही ज़िन्दगी है खूब मेहनत करो
ज़्यादा से ज़्यादा मज़े लूटो
और यादें इकट्ठा करो ।।

बंजी जम्पिंग

केवल कुमार मकवाना
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ज़िंदगी में कम ऐसे अवसर होते हैं जो हमें सच में जीवित होने का एहसास दिलाते हैं । वर्ना तो हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भूल ही जाते हैं कि जीना क्या होता है ? कियी नई चीज़ के लिए कोशिश जो हमारे कम्फर्ट ज़ोन में नहीं है, उस चीज़ का डर कहें या उसका उत्साह हमारे दिल में अजीब सी बेचैनी, हमारे पेट में अलग सी गुदगुदी देता है । जब हम छोटे बच्चे होते हैं तो हमें गिरने, नई चीज़ें करने से कोई डर नहीं लगता, भले उसे करने में हमारी टांग ही क्यों ना टूट जाए । मैंने भी बचपन में बहुत सारे ऐसे कांड किए हैं, पर मेरी टांग नहीं, हां एक दोस्त का हाथ ज़रूर टूटा था । कहने का तात्पर्य यह है कि उस समय हम छोटी-छोटी चीज़ों के लिए उत्साहित होते थे, यहां तक कि अपने जन्मदिन के लिए भी । हम जैसे-जैसे बड़े हुए हमने अपने अंदर के बच्चे को मार दिया । वो आज भी हंसना चाहता है, खेलना चाहता है, अलग-अलग चीज़ें करना चाहता है पर हम समाज या अपने आसपास के लोगों के कारण उसे दबा देते हैं ।

मुझे भी एक बार ऐसा अवसर मिला जिसमें मौत का सामना होता है पर मौत नहीं होती । वह है बंजी जम्पिंग, इसमें आपको एक लंबी रस्सी से बांधकर 250 मीटर की ऊंचाई से कूदना होता है ।

मैं और मेरा स्कूल का दोस्त (जित्तु) दिल्ली से ऋषिकेश बाईक राइड पर गए । दोस्तों के साथ पहाड़ों में गाड़ी चलाने का मज़ा ही अलग होता है । स्कूल की पुरानी बातें याद करना, मस्ती करना, चिल्ला के गाने गाना, एक दूसरे को गाली दिए बिना कोई बात ना करना, सब बहुत बढ़िया होता है ।

तो हम अपनी मंज़िल पर पहुंचे, जित्तु ने एक गो-प्रो कैमरा लिया था हमारी ट्रिप की रिकॉर्डिंग के लिए । हां वो बात अलग है कि वापस आते वक़्त उसने वो कहीं गिरा दिया । वहां पहुंच कर सबसे पहले हमने ये तय किया कि भाई कूदना कहां से है ? ऊपर आसमान में देखा तो, चिड़िया के सिवा कुछ नहीं दिखाई दिया । आगे चलते-चलते उनमें से दो-तीन ने तो हम पर अपना सफेद-सफेद प्यार भी बरसाया और ऐसा प्यार कि अब तक उन कपड़ों में से बदबू नहीं निकलती, भले ही किसी भी साबुन से धो लो । दूर किसी कोने में एक छोटी सी जगह दिखी ऊपर पहाड़ में, वहीं से हमें कूदना था । नीचे से ठीक लग रहा था, पर जब हम वहां ऊपर पहुंचे तब डर के मारे हमारे पसीने छूट गए । दिल ने यूं छलांग मारी के गले तक आ गया, यह तो अच्छा है हमारा मुंह बहुत बड़ा नहीं, नहीं तो दिल कूद कर बाहर आ जाता। 250 मीटर की ऊंचाई और नीचे गहरी खाई, मतलब डर लगना ज़ाहिर सी बात है, भले ही सारे उपकरण एक दम परफेक्ट हों और हम पूरे सलामत हैं, पर अवचेतन मन यह बात मानने से बिल्कुल मना कर रहा था कि सब कुछ सुरक्षित है, कुछ नहीं होगा, वह तो बस एक ही बात बोल रहा था कि 'भाई तू मरने वाला है, तू मरने वाला है, तेरी शादी भी नहीं हुई और तू ऐसे ही मरने वाला है ।' पर इसी के लिए तो हम यहां आए थे । इसी डर को हराने, क्योंकि सब जानते हैं 'डर के आगे जीत है' पर मेरे आगे तो जित्तु खड़ा था, वह बोला कि 'केवल पहले तू कूद' और मैं मान भी गया।

सब उपकरण और सेफ़्टी चेक के बाद मैं आगे बढ़ा । धड़कन जैसे मिल्खा सिंह बन गई थी । मुझे लगा कि नीचे गिरने से मरूं ना मरूं पर हार्ट फेल से ज़रूर मर जाऊंगा । शरीर में एड्रेनालाईन हार्मोन की मानो नदियां बह गई हों । सांसे तेज़, मैंने बस एक बार नीचे देखा । जो हमारा सहायक था उसने कहा तीन की गिनती पर कूदना । एक-दो-तीन...ये तीन सेकेंड मेरी ज़िंदगी के सबसे

खतरनाक तीन सेकेंड थे। फिर मैं कूदा, हम सभी को कभी न कभी नींद में यह सपना आता है कि हम बहुत ऊंचाई से गिर रहे हैं, आज मैं वो सपना सच में जी रहा था। बस फिर कोई डर नहीं, नीचे गिरते समय ऐसा नहीं लगा कि मैं गिर रहा हूं, लगा कि जैसे मैं उड़ रहा हूं। फिर एक बार नीचे जाने के बाद रबर फिर से आपको ऊपर खींचता है फिर नीचे...। ये जो छोटा सा वक़्त आप खुले आसमान और धरती के बीच में बिताते हैं मानो वही स्वर्ग है!

जब मैं वहां से नीचे उतरा तो पहले तो मुझे यकीन नहीं आया कि मैं ज़िंदा हूं, चलो अच्छा है LIC की पॉलिसी बच गई। उसके बाद यह यकीन नहीं आया कि हमने जंप पूरी कर ली है, साथ ही जित्तु ने भी। हम दोनों एक दूसरे के गले लगकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। वो खुशी ऐसी थी कि मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता। ऊपर से गिरने का एहसास फिर स्पाईडर मेन की तरह हवा में लटकना, बेहद अद्‌भुत !! उस दिन एक और बात समझ में आई कि जिस चीज़ से हम जितना डरते हैं, असल में वो बिल्कुल डरावनी नहीं है, हम ही उसे अपने दिमाग में डरावना बना देते हैं, जीवन में कितनी परेशानियां हैं जो इतनी मुश्किल हैं नहीं पर हम ही उसे सोच- सोच कर राई का पहाड़ बना देते हैं।

बंजी जम्पिंग हम सब को एक बार ज़रूर करनी चाहिए, ज़िंदगी जीने का पूरा एहसास होता है, ऐसे क्षण बहुत कम आते हैं। यह जीवन हमें एक ही बार मिला है और यह समय भी, पैसे कमाने नाम कमाने की रेस में अगर यह वक़्त निकल गया तो फिर वापस नहीं आएगा। मैं यह नहीं कहता कि पैसे कमाना, नाम कमाना आवश्यक नहीं है, पर कहीं हम ज़िंदगी अच्छी बनाने के चक्कर में जीना ही न भूल जाएं। अपना ध्यान रखिए, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखिए, जो चीज़ें पसंद हैं उसके लिए समय निकालिए, क्योंकि आख़री वक़्त में पैसा या पद याद नहीं आता, याद आते हैं वो खुशी के क्षण, अपनों का प्यार या फिर पछतावा कि मुझे जीवन में कितना कुछ करना था पर मैंने किया ही नहीं।

अब पसंद आपकी है कि आप किसका चयन करते हैं क्योंकि आप ही अपने जीवन के लेखक हैं।

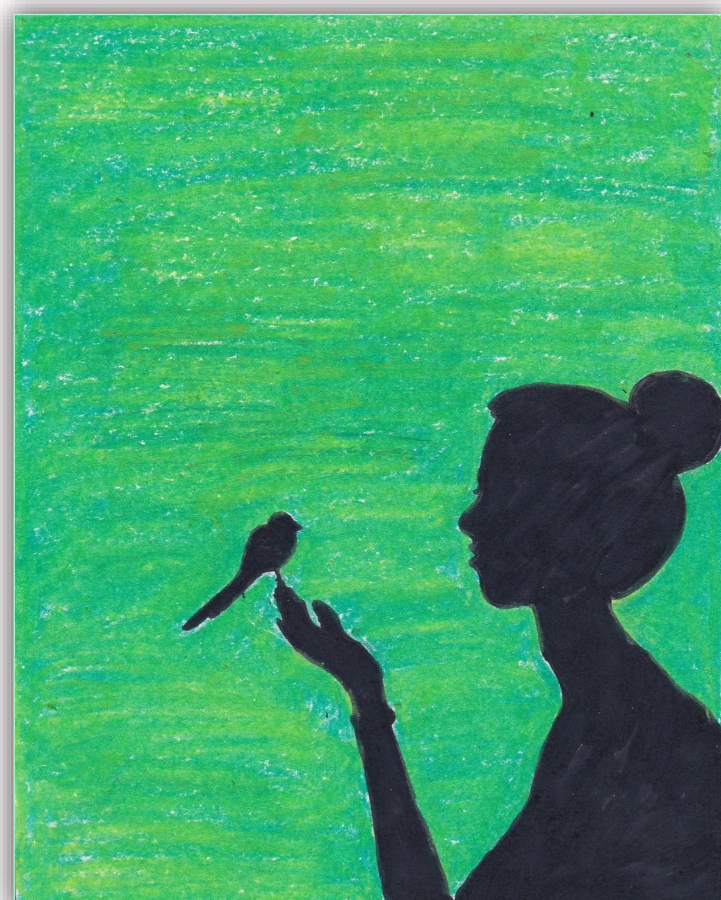

जे.आर. मालविका

सुपुत्री श्रीमती राखी पी.ओ, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा बनाया गया रेखा चित्र

31 मार्च 2017 को समाप्त वर्ष के लिए, सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र – केरला सरकार पर भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट सं.4 का सार

31 मार्च 2017 को समाप्त वर्ष के लिए, सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र – केरला सरकार पर भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट सं. 4, संविधान के अनुच्छेद 151 के तहत राज्य विधान सभा के समक्ष प्रस्तुत की जाने के लिए केरला के राज्यपाल को समर्पित करने हेतु तैयार की गयी थी । इस रिपोर्ट में केरला सरकार के सामान्य तथा सामाजिक सेवाओं के अंतर्गत आने वाले विभागों तथा स्वायत्त निकायों, जिनमें आयुष विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, उच्च शिक्षा, गृह एवं सतर्कता, स्थानीय स्वशासन, श्रम तथा कुशलता, लोक निर्माण, सामाजिक नीति तथा जल संसाधन शामिल हैं, की निष्पादन तथा अनुपालन लेखापरीक्षा के प्रमुख परिणाम अंतर्विष्ट है। यह रिपोर्ट दि.18. 06. 2018 को केरला राज्य विधान सभा के समक्ष प्रस्तुत की गई।

रिपोर्ट का प्राथमिक प्रयोजन, लेखापरीक्षा के महत्वपूर्ण परिणामों को राज्य विधान मण्डल के ध्यान में लाना है । लेखापरीक्षा निष्कर्षों से उम्मीद है कि वे कार्यकारी को सुधारात्मक कार्रवाई करने और साथ ही नीतियों तथा निर्देशों को गढ़ने के लिए सक्षम बनाएंगे जो संगठनों के बेहतर वित्तीय प्रबंधन को बढ़ावा देगा और इस प्रकार बेहतरीन शासन में योगदान देगा।

लेखापरीक्षा कार्यक्षेत्र के तहत एककों की रूपरेखा

वर्ष 2016-17 के दौरान सचिवालय स्तर पर राज्य में 43 विभाग थे । महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), केरला, राज्य के 30 सचिवालय विभागों और उसके अंतर्गत सभी सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों/स्वायत्त निकायों तथा स्थानीय स्वशासित संस्थाओं की लेखापरीक्षा आयोजित करते हैं। विभागों के अध्यक्ष अपर मुख्य सचिव/प्रधान सचिव/सचिव होते हैं जिनकी सहायता उनके अधीनस्थ निदेशकों/आयुक्तों तथा अधीनस्थों द्वारा की जाती है । महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) द्वारा 19 विभागों की लेखापरीक्षा आयोजित की जाती है।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन - प्रजनन तथा शिशु स्वास्थ्य एवं टीकाकरण

कार्यकारी संक्षेप

निष्पादन लेखापरीक्षा यह निर्धारित करने के लिए की गयी थी कि वर्ष 2012-17 के दौरान, मातृ स्वास्थ्य, शिशु स्वास्थ्य, परिवार नियोजन एवं टीकाकरण के क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के हस्तक्षेप, क्या राज्य के महिलाओं एवं शिशुओं के स्वास्थ्य मानक सुधारने में प्रभावी रहे थे। निष्पादन लेखापरीक्षा ने यह निर्धारित करने का प्रयास किया था कि क्या भौतिक एवं मानवीय संसाधन पर्याप्त थे, दवाओं व उपकरणों का प्रापण कार्यक्षम तथा मितव्ययी था और क्या समग्र वित्तीय प्रबंधन दक्षतापूर्ण तथा प्रभावी था । निष्पादन लेखापरीक्षा में निम्न विवरण के अनुसार, महिलाओं को प्रसूति सेवाएं प्रदान करने, प्रसव कक्षों में नवजात शिशुओं के लिए सुविधाएं तैयार करने में न्यूनताएं, आंतरिक संरचना की कमियां आदि प्रकट हुईं थी।

- वर्ष 2012-2017 के दौरान केरला सरकार द्वारा ₹323.22 करोड़ के आनुपातिक शेयर की सहायता निर्मोचित नहीं की थी।
- प्रसवपूर्व सुरक्षा के लिए पंजीकृत 24.95 लाख गर्भवती महिलाओं में 12 प्रतिशत से अधिक महिलाओं को आयरन तथा फोलिक एसिड की गोलियां प्राप्त नहीं हुईं। टेटानस टोक्सोइड टीका लगने वाली महिलाओं की प्रतिशतता में भी कमी हुई थी।
- 24.95 लाख गर्भवती महिलाओं में सत्ताईस प्रतिशत की एच आई वी जांच नहीं करायी गयी थी।
- चुनिंदे ज़िलों यानि कि वायनाड, मलप्पुरम, त्रिशूर तथा आलप्पुषा में नमूना जांच की गयी 65 संस्थाओं में से केवल 15 में प्रसूति सुविधा उपलब्ध थी।
- जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम के तहत गर्भवती महिलाओं को मुफ्त आहार तथा अन्य सुविधाएं प्रदान करने में कमियां आयी थी।
- सभी में प्रसव कक्षों में न्यूबॉर्न केयर कॉर्नर तथा न्यूबॉर्न स्टेबिलाइज़ेशन यूनिट जैसी सुविधाएं स्थापित नहीं की गयी थी।
- स्वास्थ्य संबंधी समस्या वाले बच्चों की शुरुआती पहचान,

उनको मुफ़्त चिकित्सा तथा प्रबंधन करने के ज़िला शुरुआती जांच केंद्रों के उद्देश्य उपलब्ध नहीं किए गए क्योंकि वर्ष 2016-17 के दौरान आलप्पुषा, मलप्पुरम, वायनाड तथा त्रिशूर ज़िलों में पहचान किए गए 9,558 बच्चों का 83 प्रतिशत अतिरिक्त चिकित्सा के लिए रिपोर्ट नहीं किया।

- मलप्पुरम तथा वायनाड ज़िलों में टीकाकरण की प्रगति कमज़ोर थी।
- स्वास्थ्य सुरक्षा संस्थाओं में आंतरिक संरचना में कमियां थी।
- भारत सरकार मार्गदर्शी सिद्धांतों के विपरीत, वर्ष 2013-17 के दौरान कासरगोड़, मलप्पुरम तथा पालक्काड़ जैसे उच्च प्राथमिकता वाले ज़िले, ₹86.40 करोड़ तक की अतिरिक्त निधियों से वंचित रह गए।

निष्पादन लेखापरीक्षा, प्रसव पूर्व सुरक्षा प्रदान करने की कमियां, सभी महिलाओं की एच.आई.वी. जांच कराने में असफलता, सभी संस्थाओं में प्रसूति सुविधाएं उपलब्ध न होना तथा आंतरिक संरचना की न्यूनताएं प्रकाश में लायी। श्रम शक्ति की कमी भी सामने लायी थी और राज्य में सिज़ेरियन सेक्शन के बढ़ते प्रचलन भी, जो कि चिंता का विषय है। जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम तथा जननी सुरक्षा योजना के तहत प्रसूति सेवाओं की कमियां भी ध्यान में आयी थी। नमूना जांच किए कई संस्थाओं में नवजात शिशुओं के लिए सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। शिशु स्वास्थ्य परीक्षण तथा शुरुआती जांच सेवाओं का पालन भी नहीं किया गया था। वर्ष 2013-17 के दौरान पहचाने गए उच्च प्राथमिकता वाले ज़िले कासरगोड़, मलप्पुरम तथा पालक्काड़ को राज्य क्षरा अनुबद्ध अतिरिक्त वित्तीय सहायता निर्मोचित नहीं की गयी। इन कमियों के बावजूद, शिशु मृत्यु दर तथा मातृ मृत्यु दर के न्यूनीकरण संबंधी संयुक्त राष्ट्र संघ सतत विकास लक्ष्य के तहत निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दृष्टि से राज्य का निष्पादन प्रभावशाली रहा।

स्थानीय स्वशासन विभाग

महिलाओं के सामाजिक - आर्थिक सशक्तिकरण में कुटुम्बश्री की भूमिका

कार्यकारी संक्षेप

ट्रावनकोर-कोचिन लिटरेरी, साइन्टिफिक एंड चैरिटेबल सोसायटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1955 के तहत पंजीकृत एक समिति -'कुटुम्बश्री' गरीबी निवारण मिशन के तौर पर 17 मई 1998 को केरला में गठित की गयी थी। कुटुम्बश्री, 43 लाख सदस्यों को शामिल करते हुए, सामूहिक महिला सहभागिता कार्यक्रम के रूप में विकसित हुई है। पिछले कुछ वर्षों में कुटुम्बश्री को श्रेष्ठ तथा बेहतरीन कार्यप्रणाली के लिए कई राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं तथा महिला सशक्तीकरण एवं उद्यमिता का विश्व स्तर पर प्रशंसित प्रतिमान है। वर्ष 2012-2017 तक की अवधि को समाविष्ट करते हुए महिलाओं के सामाजिक - आर्थिक सशक्तीकरण में कुटुम्बश्री की भूमिका निर्धारित करने के लिए एक निष्पादन लेखापरीक्षा आयोजित की गयी थी। निष्पादन लेखापरीक्षा में निम्नोक्त लेखापरीक्षा निष्कर्ष आलोक में आए।

- कुटुम्बश्री के तहत सूक्ष्म उद्यमों में कम से कम 35 प्रतिशत निष्क्रिय थे। सूक्ष्म उद्यमों को उनके द्वारा आयोजित परियोजनाओं की वित्तीय लाभकारिता को निर्धारित किए बिना पंजीकृत किया गया था। जैसे कि परिकल्पना की गयी थी, नाइबरहुड ग्रुप के सदस्यों का प्रशिक्षण आयोजित न कर सका।
- 'पुनर्जनी' जो कि 5000 कुटुम्बश्री कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित कर प्रवीणता देने तथा नियोजित करने की परियोजना है, से केवल 1,794 सदस्य ही लाभान्वित हुए। कार्यक्रम कार्यान्वियन एजेन्सी के कार्यकलापों का, कुटुम्बश्री द्वारा अनुवीक्षण नहीं किया गया था जिसके परिणामस्वरूप योजना में कमियां आयीं।
- महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना के तहत 1,50,000 महिलाओं की सहभागिता से 30,000 कृषि समूह बनाकर कम से कम 24,000 हेक्टयर जमीन पर खेती करने का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया गया था।
- 'मीडियाश्री' के तहत महिलाओं को वीडियो बनाने में प्रशिक्षण देने की परियोजना, इच्छित परिणाम नहीं दे सकी।
- टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइन्सेज़ के सहयोग से कुटुम्बश्री द्वारा कार्यान्वित कम्यूनिटी कॉलेज प्रोग्राम, केवल 43

विद्यार्थियों के केवल एक बैच को ही एक वर्ष का डेवलपमेंट प्राक्सिस में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदान किया।

- कुटुम्बश्री के अंतर्गत वित्तीय प्रबंधन त्रुटिपूर्ण था। वित्तीय विवरणों में महत्वपूर्ण मिथ्याकथन अंतर्विष्ट हैं और वर्ष 2012-2016 के दौरान के कुटुम्बश्री के वित्तीय संव्यवहारों का सही चित्र नहीं देते हैं।

महिला सशक्तीकरण हेतु विभिन्न परियोजनाओं के कार्यान्वयन की प्रणालीगत कमियां निष्पादन लेखापरीक्षा में प्रकट हुईं। उद्यमों के निरंतर संचालन तथा लाभप्रदता सुनिश्चित करने के लिए माइक्रो एंटरप्राइसेस के कार्यचालन पर कोई प्रभावी अनुवीक्षण नहीं था। एक अस्पष्ट चयन प्रक्रिया का पालन करके कार्यक्रम कार्यान्वयन अभिकरणों को कार्य सुपुर्द किए जाते थे। कुटुम्बश्री द्वारा कार्यों की निविदा नहीं की जाती थी और सक्षम अभिकरणों का चयन सुनिश्चित नहीं किया जाता था जिसके परिणामस्वरूप योजनाएं उद्दिष्ट परिणाम देने के लिए समर्थ नहीं रहीं। वित्तीय प्रबंधन कमज़ोर था और लेखाओं के संपरीक्षित विवरण वस्तुनिष्ठ मिथ्याकथनों से युक्त थे। आंतरिक नियंत्रण प्रणाली कमज़ोर थी। वर्ष 2008-09 से लेकर महालेखाकार की रिपोर्टों का निपटान लंबित है।

सामाजिक नीति विभाग

केरला सोश्यल सिक्युरिटी मिशन का कार्य

कार्यकारी संक्षेप

केरला सोश्यल सिक्युरिटी मिशन (के एस एस एम), ट्रावनकोर-कोचिन लिटरेरी एंड साइन्टिफिक एंड चैरिटेबल सोसायटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1955 के अंतर्गत पंजीकृत एक सोसायटी है जिसका गठन राज्य में सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के निरूपण एवं कार्यान्वयन हेतु किया गया था। वर्ष 2012-17 की अवधि को समाविष्ट करते हुए के एस एस एम के कार्य पर एक निष्पादन लेखापरीक्षा आयोजित की गयी थी। निष्पादन लेखापरीक्षा, के एस एस एम द्वारा कार्यान्वित विभिन्न कार्यक्रमों/ योजनाओं के प्रभाव के आकलन, वित्तीय प्रबंधन की दक्षता तथा आंतरिक नियंत्रण तंत्र की स्थिति पर संकेंद्रित थी जिसमें निम्न लेखापरीक्षा निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए।

- के एस एस एम के केवल वित्त वर्ष 2014-15 के लेखाओं की लेखापरीक्षा की गयी थी, वर्ष 2015-17 के लिए लेखाओं को अभी तक अंतिम रूप नहीं दिया गया था। वर्ष 2012-13 से 2014-15 के दौरान लेखापरीक्षकों द्वारा सूचित प्रणालीगत कमियां कायम थी।

- के एस एस एम के कोरपस निधि से ₹20 करोड़ कुटुम्बश्री मिशन को अंतरित करने के केरला सरकार के आदेश के कारण परिपक्वता अवधि से पहले सावधि जमा बंध किया गया जिसके परिणामस्वरूप के एस एस एम को ₹0.59 करोड़ की ब्याज स्वरूप आय की हानि हुई।

- 'श्रुतितरंगम' योजना के अंतर्गत सरकारी मेडिकल कॉलेज, कोषिक्कोड में 134 बच्चे, कर्णावत आरोपण की उपयुक्तता निर्धारित करने के लिए श्रवण द्वार के अनिवार्य जांच तथा निरूपण हेतु प्रतीक्षा कर रहे थे (अगस्त 2017)।

- शय्याग्रस्त मरीज़ों की देख-रेख करने वालों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की योजना, आश्वासकिरणम के अंतर्गत सहायता प्राप्त करने के लिए के एस एस एम में प्राप्त लगभग 10,000 आवेदन पत्र के बंडलों के ढेर, बिना पंजीकरण व संसाधन के मिशन के कार्यालय में पड़े पाए गए।

- संस्थाओं के अध्यक्ष से ऑनलाइन आवेदन पत्रों की यथोचित हस्ताक्षरित और मुद्रांकित कंप्यूटर उत्पन्न सूची की प्राप्ति सुनिश्चित करने और अनुवर्ती कार्रवाई करने की के एस एस एम की विफलता के कारण, माता-पिता में से किसी एक या दोनों की मृत्यु पर बच्चों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की योजना, स्नेहपूर्वम के तहत 57,831 हिताधिकारी सहायता से वंचित रह गए।

- अविवाहित आदिवासी माताओं को पहचानने में वयोमित्रम समन्वयकों / बाल विकास परियोजना अधिकारियों के पक्ष में हुई विफलता, स्नेह स्पर्शम योजना के अंतर्गत यथा परिकल्पित सभी संभावित लाभार्थियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की असमर्थता में परिणत हुई।

राज्य की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के निरूपण एवं कार्यान्वयन करने के उद्देश्य से के एस एस एम की कल्पना की गयी थी। जबकि वर्ष 2015-17 के लिए लेखाओं को अभी तक अंतिम रूप नहीं दिया गया है, वर्ष 2012-2015 के दौरान लेखापरीक्षकों द्वारा सूचित प्रणालीगत कमियां अब भी

बरकरार थी। योजना निधियों का विपथन ध्यान में आया था। संभावित हिताधिकारियों द्वारा प्राप्त आवेदन पत्रों का सामयिक संसाधन न करने के परिणामस्वरूप उनमें से कई लोग योजना के हित लाभों से वंचित रह गए। आंतरिक नियंत्रण कमज़ोर था जिसके कारण वित्तीय प्रबंधन मंद पड़ गया और योजना के कार्यान्वयन में कमियां आयी। के एस एस एम के निष्पादन में सुधार की आवश्यकता है।

जल संसाधन विभाग

केरला वॉटर अथॉरिटी में 'इनहान्स्ड अड्वान्स्ड बिलिंग अकाउन्टिंग एंड कलेक्शन यूटिलिटी सिस्टम' (eABACUS) की सूचना प्रणाली लेखापरीक्षा

कार्यकारी संक्षेप

केरला वॉटर अथॉरिटी को राज्य की जनता को पर्यावरण-अनुकूल तथा सतत् तरीके से गुणतापूर्ण पेयजल तथा सीवरेज सेवाएं प्रदान करने का कर्तव्य सौंपा गया है। 'इनहान्स्ड अड्वान्स्ड बिलिंग अकाउन्टिंग एंड कलेक्शन यूटिलिटी सिस्टम' (eABACUS), एन आई सी द्वारा विकसित बिल बनाने, लेखाकरण करने तथा संग्रहण करने की प्रणाली है जिसका उपयोग केरला वॉटर अथॉरिटी में किया जाता है। eABACUS में पायी गयी आयोजन, प्रणाली अभिकल्पना, आई टी नियंत्रण तथा सुरक्षा की कमियां निम्न प्रकार हैं :

- सिस्टम डिज़ाइन की कमियों के कारण कारोबार नियमों की ग़लत मैपिंग हुई जो ₹76.50 लाख की राशि के शुल्क तथा जुर्माने के गैर-संग्रह में परिणत हुआ।
- डाटा बेस के अनुचित डिज़ाइन के कारण ऑनलाइन अनुवीक्षण नियंत्रण के उपयोग करने से सिस्टम वंचित रह गया जिसके परिणामस्वरूप ₹6.42 लाख का गबन हुआ।
- कर्तव्यों के पृथक्करण की उपेक्षा करने के कारण सिस्टम अनियमितता के जोखिम के लिए सुगम्य हो गया और संव्यवहारों की विश्वसनीयता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया।
- एक्सेस कंट्रोल की विफलता के कारण सिस्टम, उपभोक्ताओं को बिलिंग साइकिल से निषेध करने के जोखिम के चपेट में आया।
- सेवा संविदाओं के अपर्याप्त अनुवीक्षण के कारण विफल संव्यवहारों की राशि के विपर्यास और उपभोक्ताओं से वसूल किए गए ₹8.50 लाख के सेवा प्रभारों के अप्रतिदाय में परिणत हुआ।
- कारोबार नियमों की मैपिंग की ग़लतियां और विलंब के कारण, प्रणाली में ₹450.66 लाख के सिवरेज तथा जल प्रभारों के अल्प संग्रह तथा ₹1.35 लाख के जल प्रभारों के अधि संग्रह को शामिल करने वाले संव्यवहारों का गलत संसाधन हुआ।
- सॉफ़्टवेयर में कमज़ोर संसाधन नियंत्रणों तथा ग़लतियों के कारण त्रुटि-पूर्ण जल प्रभार बिल बनाए गए जिसके परिणामस्वरूप ₹17.38 लाख की हानि हुई।
- मानकीकरण जांच कराने में हुई विफलता के कारण, प्रणाली में प्रमुख सूचना सुरक्षा ख़ामियां उजागर हुईं।

लेखापरीक्षा में देखा गया कि eABACUS की परिकल्पना तथा कार्यान्वयन द्वारा के.डब्ल्यू.ए. और उपभोक्ता दोनों लाभान्वित हुए हैं। ऑनलाइन मोड, बैंक अंतरण आदि जैसे भुगतान के अधिक विकल्पों को सुकर बनाने वाले वेब आधारित अनुप्रयोग के प्रस्तुतीकरण तथा आम सेवा केंद्रों के माध्यम से भुगतान आदि द्वारा देय राशियों के वर्धित संग्रहण से के.डब्ल्यू.ए. लाभान्वित हुआ और के.डब्ल्यू.ए. काउन्टरों में जाने के बजाय घर से ही आराम से भुगतान हो जाने के कारण उपभोक्ता लाभान्वित हुए। तथापि, जल प्रभारों की बिलिंग में, संग्रहण तथा लेखाकरण में, उपभोक्ता की संतुष्टि बढ़ाने में, परियोजना तथा संविदा प्रबंधन में तथा सूचना प्रौद्योगिकी नियंत्रण में लेखापरीक्षा द्वारा निम्न कमियां देखी गयी जो कि एक मज़बूत आई टी सिस्टम बनने के eABACUS के पथ पर अड़चन बनी थी।

- परिकल्पना की कमियां तथा अनुवीक्षण नियंत्रण की त्रुटियों के परिणामस्वरूप नकद गबन।
- परिवर्तन प्रबंधन की कमियों के कारण संसाधन नियंत्रणों में अपर्याप्तताएं हुई।
- अपर्याप्त सहायक सामग्रियां, पासवर्ड नीतियों के अभाव दोनों मिलकर प्रणाली में अप्राधिकृत उपागम अधिकार की व्यवस्था प्रदान करने में परिणत हुआ।
- गैर- ऑटोमेटेड मीटर रीडिंग, उपभोक्ताओं से देय राशियों के

भुगतान की विभिन्न ऑनलाइन विधियों की सुविधाएं अपर्याप्त रूप से प्रदान करने के कारण उपभोक्ताओं को अपनी देय राशियों के सामयिक प्रेषण में दिक्कत हुई।

अनुपालन लेखापरीक्षा पैराग्राफ

अनुपालन लेखापरीक्षा के दौरान देखी गयी महत्वपूर्ण कमियां निम्नोक्त पैराग्राफों में विस्तृत हैं।

कारखाने के कर्मियों की सुरक्षा में फैक्ट्री एवं बायलर विभाग की भूमिका-

फैक्ट्री एवं बायलर विभाग की लेखापरीक्षा, फैक्ट्रीज़ अधिनियम 1948 तथा अन्य संगत विधानों में यथा अनुबद्ध विभाग द्वारा कारखाने के कर्मियों की सुरक्षा से संबंधित व्यवस्थाओं के प्रवर्तन के मूल्यांकन करने के लिए अप्रैल 2017 से अगस्त 2017 तक वर्ष 2012-13 से 2016-17 तक की अवधि को समाविष्ट करते हुए आयोजित की थी। लेखापरीक्षा में प्रकट हुआ कि फैक्ट्री एवं बायलर विभाग द्वारा कारखानों में अधिनियम के तहत अनुबद्ध सुरक्षा मानकों के अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी तंत्र नहीं था। विभाग के साथ पंजीकृत कारखानों की कम संख्या, विभाग के साथ पंजीकृत कारखानों के निरीक्षण की अपर्याप्तता तथा सुरक्षा कार्य पर प्रशिक्षण प्रदान करने में अवरोध प्रकट करता है कि कर्मियों की सुरक्षा के संदर्भ में फैक्ट्रीज़ अधिनियम के प्रावधानों का कार्यान्वयन असंतोषजनक था।

अंतर्राज्यीय प्रवासी कामगार (रोज़गार का विनियमन एवं सेवा शर्तें) अधिनियम 1979 का कार्यान्वयन

श्रम तथा कुशलता मंत्रालय द्वारा, अंतर्राज्यीय प्रवासी कामगार (रोज़गार का विनियमन एवं सेवा शर्तें) अधिनियम 1979 तथा नियमों के तहत यथा अनुबद्ध अंतर्राज्यीय प्रवासी कामगारों (आई एस एम डब्ल्यू) से संबंधित प्रावधानों का अनुपालन के मूल्य निर्धारण करने के लिए लेखापरीक्षा अप्रैल 2017 से जुलाई 2017 तक वर्ष 2012-13 से 2016-17 तक की अवधि को समाविष्ट करते हुए आयोजित की थी।

लेखापरीक्षा द्वारा देखा गया कि (क) आई एस एम डब्ल्यू की पहचान करने और उनका अधिनियम के तहत हितलाभों से वंचित रहना सुनिश्चित करने में, (ख) आई एस एम डब्ल्यू के नियोजन करने वाली सभी संस्थापनाओं का अधिनियम के तहत पंजीकरण सुनिश्चित करने में, (ग) गृह राज्य के एक सक्षम प्राधिकरण द्वारा जारी वैद्य लाइसेंस है या नहीं इस बात को सुनिश्चित किए बगैर संविदाकारों को लाइसेंस जारी करने में तथा (घ) अधिनियम के तहत मामलों का कर्मठता से अनुसरण करने और अपराधियों का अभियोग सुनिश्चित करने में विभाग के पक्ष में ढील हुई थी। लेखापरीक्षा में प्रकट हुआ कि राज्य में अंतर्राज्यीय प्रवासी कामगार अधिनियम का कार्यान्वयन, अत: प्रभावपूर्ण नहीं था।

निगरानी / प्रशासनिक नियंत्रणों की विफलता

लेखापरीक्षा में ऐसी घटनाएं सामने आयीं जहां स्वास्थ्य, शिक्षा, विकास तथा आंतरिक संरचना व लोक सेवा का उन्नयन आदि क्षेत्रों में समाज के हितलाभार्थ सार्वजनिक परिसंपत्तियों के सृजन के लिए सरकार द्वारा निर्मोचित निधियां अनुपयोगित / अवरुद्ध रह गयी थी और/या अनिश्चितता, प्रशासनिक निगरानी तथा विभिन्न स्तरों पर सम्मिलित कार्रवाई की कमी के कारण व्यर्थ / अनुत्पादक सिद्ध हुई थी। ब्योरे नीचे दिए गए हैं:

•विळप्पिलशाला पुलीस थाना, तिरुवनंतपुरम में औपचारिक प्रावधानों के अननुपालन तथा अनिवार्य दायित्वों के निर्वहन में ढील आदि के परिणामस्वरूप ₹4.86 लाख का दुर्विनियोजन हुआ।

•केरला सरकार द्वारा फार्मस्यूटिकल फैक्टरी के निर्माण के लिए 'आवासीय क्षेत्र' के अंतर्गत आने वाले जमीन को अनियमित रूप से सौंपे जाना, स्थानीय निकाय से अनिवार्य निकासियों के अस्वीकार में परिणत हुआ और परिणामस्वरूप ₹3.76 करोड की समतुल्य निधियों के निष्क्रिय निवेश तथा निधि रोध हुआ।

•निदेशक, तकनीकी शिक्षा द्वारा सहायक प्रोफेसरों के पद पर नियुक्ति करते समय ए आई सी टी ई प्रतिमानों/ केरला सरकार के आदेशों का उल्लंघन किया गया जिसके परिणामस्वरूप नमूना जांच किए गए 24 मामलों में कम से कम ₹1.46 करोड का अग्राह्य भुगतान हुआ।

•प्रिंसिपल, सेंट्रल पॉलिटेक्निक कॉलेज, तिरुवनंतपुरम द्वारा अनुवर्तन तथा वर्ष 2015-16 के लिए ए.आई.सी.टी.ई. के अनुमोदन के विस्तार हेतु आवेदन पत्रों के सफल प्रस्तुतीकरण सुनिश्चित न करने के कारण वर्ष 2015-16 में उसके पाठ्यक्रमों में 360 विद्यार्थियों को अनियमित प्रवेश प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त, चूँकि निरीक्षण के दौरान देखी गयी कमियों के कारण ए.आई.सी.टी.ई. द्वारा विद्यार्थियों के प्रवेश को पुन:स्थापित नहीं किया गया था, वर्ष 2016-17 में उसके छ: पाठ्यक्रमों में किसी में भी प्रवेश नहीं दिया जा सका।

- निश्चित अवधि के भीतर दो इमारतों के निर्माण के लिए निविदाओं को अंतिम रूप नहीं देने के कारण केरला सरकार को ₹1.53 करोड़ का परिहार्य अतिरिक्त व्यय हुआ।

लघु कथा

नीयत

प्रियंका चौरसिया

डी ई ओ

जाकी रही भावना जैसी
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी

एक महिला रोज़ मंदिर जाती थी, एक दिन उस महिला ने पुजारी से कहा अब मैं मंदिर नहीं आया करूंगी। इस पर पुजारी ने पूछा - क्यों ?

तब महिला बोली - मैं देखती हूं लोग मंदिर परिसर में अपने फोन पर अपने व्यापार की बातें करते हैं, कुछ ने तो मंदिर को गपशप करने का स्थान बना रखा है ! कई लोग पूजा कम, पाखंड या दिखावा ज़्यादा करते हैं।

इस पर पुजारी कुछ देर चुप रहे फिर कहा– सहीं है ! परंतु अपना अंतिम निर्णय लेने से पहले क्या आप मेरे कहने से कुछ कर सकती हैं !

महिला बोली– आप बताइए क्या करना है ?

पुजारी ने कहा- एक गिलास पानी भर लीजिए और दो बार मंदिर परिसर के अंदर परिक्रमा लगाइए। शर्त ये है कि गिलास का पानी गिरना नहीं चाहिए।

महिला बोली - ठीक है मैं ऐसा कर सकती हूँ।

फिर थोड़ी ही देर में उस महिला ने ऐसा ही कर दिखाया। उसके बाद पुजारी ने महिला से तीन सवाल पूछे -

1. क्या आपने किसी को फोन पर बात करते देखा ?
2. क्या आपने किसी को मंदिर में गपशप करते देखा ?
3. क्या किसी को दिखावा करते देखा ?

महिला बोली - मैंने कुछ भी नहीं देखा।

फिर पुजारी बोले - आप जब परिक्रमा लगा रही थीं तो आपका पूरा ध्यान गिलास पर था, कि इससे पानी न गिर जाए इसलिए आपको कुछ दिखाई नहीं दिया।

जब भी मंदिर आएं तो अपना ध्यान सिर्फ परमपिता परमात्मा में ही लगाना फिर आपको कुछ दिखाई नहीं देगा, सिर्फ भगवान ही सर्वत्र दिखाई देंगे। अर्थात् जो हमारे दिमाग में चल रहा होता है, जैसी अच्छी बुरी भावना उस वस्तु या व्यक्ति विशेष के प्रति रखते हैं, उसी दृष्टि से हम आसपास का आकलन करते हैं।

इसलिए दृष्टि को बदलें, सृष्टि को नहीं

एक न एक गुण या अवगुण सभी में होते हैं मात्र ग्रहणता की बात है कि आप क्या ग्रहण करते हैं- गुण या अवगुण ?

कब तक ?

नीरु त्रिपाठी
आशुलिपिक

चार दीवारी में मेरे सपने सिमटे,
कब तक ? आख़िर कब तक ?
कब तक करोगे क़ैद मुझे प्यार के नाम पर
रीति रिवाजों और इस समाज के नाम पर
क्योंकि ना मैं गुनाहगार हूँ ना मुजरिम
क्यों तुम मेरे न्यायाधीश बनकर
कलम तोड़ मुझे उम्र क़ैद की सज़ा सुना दी।
इसे मेरी गुस्ताख़ी ना समझो,
अगर मुझे ये क़ैद मंज़ूर ना हो।
मैंने जीवन साथी बनाया,
तुमसे एक अच्छा दोस्त चाहा, लेकिन तुम-
मेरे देवता बनने की कोशिश करने लगे।
सारी दुनिया की सैर का सपना दिखा
इस चार दीवारी को मेरी दुनिया बना दिया।
लोग कहते हैं बड़े घर की बहुरानी हूँ मैं,
मेरा घर बहुत बड़ा है।।
पर मेरे कमरे कि चार दीवारी के आगे मेरा जहां, कहां है।।
पता है कि कमरे में एक खिड़की है
जिसे खोलकर बाहर देखना मना है।
ये चार दीवारी और ये सड़ी गली चादर...
मेरे सपने अभी भी ज़िंदा हैं
इस चादर को कभी तो हवाएं हटाएंगी
और मुलाकात होगी फ़िज़ाओं से मेरी।।
फिर शुरू होगा मेरा चादर के उस पार का सफ़र
लाखों की भीड़ में निकलकर, अपना अस्तित्व ढूंढने का सफ़र
ये चार दीवारियां, और ये सड़ी-गली चादर,
रोकेंगी मुझे कब तक ? आख़िर कब तक ??

हैरतअंगेज़ लद्दाख

के.एस. मीनाक्षी
सुपुत्री जे.आर.आशा
हिदीं अधिकारी

'महान दर्रों की भूमि' लद्दाख जम्मू कश्मीर में महान हिमालय की तलहटी में स्थित एक बंजर किंतु आकर्षक क्षेत्र है। मेरा और मेरे परिवार का लद्दाख जाने का वर्षों पुराना सपना मई 2018 में पूरा हुआ । हमारी यात्रा तिरुवनंतपुरम हवाईअड्डे से आरंभ हुई, जैसे - जैसे हम अपने गंतव्य के नज़दीक जा रहे थे, वायुयान से दिखने वाली विस्तृत पर्वत चोटियां और हिमनद हमारे उत्साह को बढ़ा रहे थे । एक हिल स्टेशन पर स्थित हवाईअड्डे की संकरी पट्टी पर हमारा वायुयान उतरा । वहाँ का मौसम बहुत ही ठण्डा था इसलिए सभी यात्रियों को उस दिन बाहर न जाने और विश्राम करने की सलाह दी गई ताकि वहां के वातावरण के अनुकूल बना सकें । हमारा होटल एक बहुत ही सुन्दर घाटी में स्थित था जहां से बर्फ से ढके पर्वतों और घाटियों का मनमोहक दृश्य उभर रहा था । अगले दिन हम शान्ति स्तूप देखने गए, जो

पहाड़ी की ऊंचाई पर जापानियों द्वारा निर्मित बौद्धों के सफेद गुम्बद के आकार में था । वहां मौजूद कई बौद्ध मूर्तियां तथा कलाकृतियों के साथ ही स्तूप से पहाड़ी के चारों तरफ का मनोरम दृश्य देखा जा सकता था । उसके बाद हम लोग लेह पैलेस गए, यह पैलेस कभी कश्मीरी शाही परिवार का निवास स्थान हुआ करता था जिसे डोगरियों के आक्रमण के बाद शाही परिवार द्वारा छोड़ दिया गया था, अब यह एक पर्यटक स्थल के रूप में जाना जाता है । पहाड़ी की चोटी पर स्थित होने के कारण यहां पहुंचने के लिए हम लोगों को काफी चढ़ाई करनी पड़ी । हमने ऊंचाई पर होने वाले अस्वस्थता के लक्षण जैसे- सांस लेने में कठिनाई तथा थकावट महसूस की । फिर भी हम वहां पहुंचने में कामयाब रहे, उस पुरानी इमारत की कई तस्वीरें मैंने अपने कैमरे में कैद की । रात को हमने होटल में विश्राम किया । अगले दिन हम हॉल ऑफ़ फेम गए, जो एक युद्ध स्मारक है । यहां कारगिल युद्ध में लड़ने वाले सैनिकों से जुड़ी कई सूचनाएं तथा संस्मरण देखे जा सकते हैं। सियाचिन जैसे दुर्गम क्षेत्रों में तैनाती के दौरान सैनिकों द्वारा प्रयुक्त उपकरणों को एक प्रदर्शन के माध्यम से दिखाया गया है । परिसर के अन्दर ही सैनिकों हेतु एक कब्रिस्तान तथा उनके सम्मान में एक स्मारक बनाया गया था । हम लोग भारतीय सेना द्वारा अनुरक्षित पत्थर साहिब गुरूद्वारा भी गए, वक़्त की कमी की वजह से हम वहां ज़्यादा देर तक रुक नहीं पाए तथा हमें लंगर, जो समाज के सभी वर्गों के स्वयंसेवकों द्वारा स्वेच्छा से तैयार व परोसे जाने वाला भोजन है, के लिए मना करना पड़ा । दोपहर के भोजन के तौर पर हमने लद्दाखी शैली का मसालेदार फ्राइड राइस खाया । उसके बाद हम राष्ट्रीय राजमार्ग 1 से होकर अपनी अगली मंज़िल की ओर बढ़े । तस्वीरें लेने के लिए यह राजमार्ग दिलकश नज़ारों से लबरेज़ है, वहां यातायात कम होने की वजह से हमने कई तस्वीरें लीं । यह इलाका लंबी घुमावदार

सड़कों तथा चारों तरफ़ से पर्वतों तथा पथरीली ज़मीन से घिरा हुआ था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि लद्दाख में ही ज़्यादातर ऑटोमोबाइल विज्ञापनों को फिल्माया गया है।

हम अपने अगले पड़ाव 'संगम' पहुंचे, संगम दो नदियों सिंधु तथा जांस्कर का संगम है। मैं इस बात से ख़फ़ा थी कि ये नदियां उतनी जीवंत या विशेष नहीं दिखीं जैसा मैने इंटरनेट पर देखा था। दोनों नदियां एक जैसी ही दिख रहीं थी लेकिन बाद में मुझे पता चला कि मौसम के कारण ऐसा हुआ था। फिर भी यहां का नज़ारा हसीन था मैंने अपना काफी वक़्त विविध रंग व आकार के कंकड़ इकट्ठा करने में बिताया। गहन पहाड़ियों से बहकर आ रहा सिन्धु नदी का जल, बहुत शीतल था।

अपनी वापसी के दौरान हम मैग्नेटिक हिल गए। यह चुम्बकीय आकर्षण से युक्त एक पहाड़ी थी। अगर आप अपना वाहन बंद कर सड़क के चिह्नित स्थान पर खड़ा करते हैं तो यह पीछे, पहाड़ी की तरफ जाती प्रतीत होगी। कार में बैठे हुए हमने ऐसा महसूस किया कि हम पीछे की तरफ़ जा रहे हैं। हम लोग होटल लौटे तथा रात्रि विश्राम किया।

अगले दिन चांगला दर्रे से पैंगोंग झील जाते समय हमें साढ़े पांच घंटों का लम्बा सफ़र करना पड़ा। चांगला दर्रा, जो दुनिया की दूसरी सबसे ऊंची वाहन चलाने योग्य सड़क है, बहुत ही दुर्गम और पथरीला था। इसने हमारी यात्रा को कठिन कर दिया था। ऊंचाई बढ़ने के साथ ही हमें सांस लेने में तकलीफ़ होने लगी। ऊंचाई के अन्तर से हम सबसे ज़्यादा प्रभावित थे क्योंकि केरला का ज़्यादातर भाग समुद्रतल से नीचे है। अत: ऐसी स्थिति को हम आसानी से नही संभाल पाए। अंतत: हम पैंगोंग सो पहुंचे जिसका तात्पर्य है ऊंचे घास के मैदान वाली झील। यह कई किलोमीटर तक फैली जलीय जीवन विहीन खारे पानी की सुन्दर झील है। मैंने ज़िंदगी में कभी भी एक ही जगह नीले रंग के इतने सारे हसीन झरोखे जो जामुनी गहरे नीले से आसमानी रंग से सराबोर थे, नहीं देखे थे। झील का पानी मानो नीली तरंगों से अठखेलियां कर रहा था। हमारी वापसी यात्रा वैसी ही थकान भरी रही, होटल में हमने बेसुध होकर अपनी नींद पूरी की। उस थकान भरी यात्रा की थकावट के कारण हम लोग सुबह देर से उठे। फिर हम खारदूंगला दर्रा घूमने के लिए निकले, जो दुनिया की सबसे ऊंची मोटरबाइक के लिए अनुकूल सड़क है। यहां की यात्रा में लगभग 2 घण्टों का समय लगा। ऊंचाई ज़्यादा होने के कारण सड़क की ढाल बहुत तीव्र थी। हम हांफते हुए ऊंचाई पर पहुंचे, हमने जल्दबाज़ी में ही खारदूंगला दर्रे के चिह्नित स्थान पर तस्वीरें ली और वापस आए।

हमने अपनी शाम लेह मार्केट में खरीदारी करने में बिताई। वहां कई प्रकार के तिब्बती हस्तशिल्प, आभूषण तथा शॉल आदि बिक रहे थे। 'मणि' जिसे तिब्बती लोग पूजा के दौरान हाथ से घुमाते हैं का छोटा रूप घर ले जाने के लिए एक यादगार वस्तु थी। अगले दिन सुबह की फ़्लाईट से हमने लद्दाख को अलविदा कहा।

जैसे ही हमारे जहाज़ ने उड़ान भरी और पहाड़ों के ऊपर पहुंचा, खट्टी-मीठी यादों को समेटे हुए मैंने लद्दाख की हैरतअंगेज़ खूबसूरती को अलविदा कहा। कभी ना भुलाने वाले लम्हों को समेटता ये सफ़र मेरे लिए एक अनोखा अनुभव था जो मेरे ज़हन में हसीन यादों की तरह हमेशा ज़िन्दा रहेगा।

कला नशा है, नशा कला नहीं

बिपिन ई.बी.
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नया शहर नयी कहानी-

मैं, पेशे से चित्रकार, यहां कबीर नगर में नया हूं। किराये का घर। घर में प्रवेश करते ही उनकी दीवारों पर बने चित्रों ने मन मोह लिया। मानो किसी ने दीवारों में जान डाल दी हो। पहली सुबह चाय पीने पास के रेलवे स्टेशन पहुंचा जहां की पटरियां कबीर नगर और जंगल से गुज़रती हैं। चाय की पहली चुस्की ली और मेरा बेग जिसमें चित्रकारी का साज़ो-सामान था गायब हो गया। मैं हैरान, परेशान, घबराकर बेग इधर-उधर ढूंढने लगा। चाय वाले ने कहा- घबराइए नहीं, रवि 'अकेला' आपका बेग लौटा देगा। कौन रवि ? कहां ले गया मेरा बेग ? नहीं लाया तो ? मेरे इन सवालों के बीच चाय वाले ने कहा - अब क्या बताएं साहब ? बड़ी दुख भरी कहानी है।

रवि आयु 35 वर्ष, काम चित्रकारी, कबीर नगर में कंपनी द्वारा दिए गए घर में रहता था। उसका कला प्रेम उसके घर की दीवारों पर देखा जा सकता था। कोई परिवार नहीं...शायद इसीलिए 'अकेला'। एक बुरी आदत भी थी– नशा करना। यूं था कि जीवन में कला और नशा ही सब कुछ था !

एक सुबह समाचार पत्र पढ़ते हुए उसने सामने वाले घर में एक युवती को देखा। पहली बार में ही उसने रवि के मन में इस तरह घर कर लिया कि उसे हर जगह वही दिखने लगी। एक तरफ़ रवि ने तय कर लिया कि उस युवती की सुंदरता को कैनवास पर उतारेगा। वहीं दूसरी तरफ़ नशे की आदत ने उसे बुरी तरह जकड़ लिया था। कार्यरत कंपनी से काम चोरी के आरोप लगे, नए चित्रों का दबाव आने लगा।

एक दिन नशे में धुत्त, ख़राब मौसम में वो निकल पड़ा जंगलों में। चलते चलते उसका ध्यान एक पेड़ की तरफ़ गया जिसके नीचे ज़मीन पर कोई लेटा था, पास जाकर देखा तो वही युवती थी...ख़ामोश थी, जिसे कैनवास पर उतारना था वो सामने है.. और क्या चाहिए !!! तुरंत रवि ने कैनवास निकाला और उसका चित्र बनाने लगा। चित्र पूरा करते तक नशे की दो और पुड़िया भी ख़त्म कर दी। और वहां से निकल गया। अगले दिन होश में आने पर रवि ने समाचार पत्र देखा.. जिसके मुख्य पृष्ठ पर एक शीर्षक था 'देहरादून के कबीर नगर की युवती के साथ दुष्कर्म, की आत्महत्या' और फिर उसने कैनवास की ओर देखा।

नशे से नाश तक का रास्ता-

चाय वाला- 'अब रवि को क्या पता था साहब कि जो चित्र में लेटी है वो असल में बेहोश थी। उसे क्या पता था कि जो चेहरे पर लाली है वो खून था, जो अंग बाहर हैं वो कपड़े फटने की वजह से थे। वो तो नशे में धुत्त था...सदमा लगा। लोग पागल कहने लगे। वैसे सच्चाई का तो पता नहीं साहब पर लोग तो यही किस्सा कहते हैं। बाकी उसकी कला का परिचय तो आपकी दीवारों ने दिया ही होगा।

चाय ठंडी हो गई। चाय वाले ने मुस्कुराते हुए दुकान के सामने रखे मेरे बेग की तरफ़ इशारा किया।

मैं वहां से लौटा कुछ सवालों के साथ ! रवि बेग क्यों ले गया ? क्या वो नहीं चाहता कि कोई भी चित्रकारी करे ? क्या रवि सच में पागल है ? फिर उसने बेग क्यों लौटाया ? चाय वाले की कहानी सच्ची है या मनगढ़ंत ?

लेकिन सबसे अहम सवाल ये है कि अगर उस दिन वो नशे में न होता तो क्या उस युवती को बचा सकता था ?

वो कहते हैं ना कि जिन सवालों के जवाब नहीं होते... उनकी गहराई के हिसाब नहीं होते।

नशा और नाश में एक मात्रा का ही अंतर है। रवि चाहे न समझा हो, उसकी यह कहानी पढ़ने वाले को समझाने का ये मेरा एक प्रयास मात्र है।

पहला पाठ

आशीष कुमार
लेखापरीक्षक

एक राजकुमार गुरू के पास पहुंचा और उससे कहा कि वह ज्ञान पाना चाहता है - वो भी अभी ! गुरू ने उसे शिक्षा देना स्वीकार कर लिया । यह जानकर कि राजकुमार शतरंज में निपुण है, गुरू ने आगंतुक और अपने भिक्षु जो कि अभी शतरंज खेलना सीखा ही था के बीच बाज़ी लगा दी । शर्त ये थी कि जो हारेगा उसका सिर कलम कर दिया जाएगा ।

ज़ाहिर था कि राजकुमार बाज़ी पर हावी होने लगा । जल्द, किसी तरह, उसकी चेतना जागनी शुरू हुई, 'मैं इस मठ में स्वार्थ पूर्ण उद्देश्य से आया हूं, किंतु अब मैं इस गरीब भिक्षु की मौत का कारण बन जाऊंगा ।'

ऐसे में उसमें करूणाशीलता का भाव जाग गया । वह जानबूझकर बुरा खेलने लगा । किंतु अच्छा खेलना अब उसकी दूसरी प्रकृति बन चुकी थी । बुरा खेलने पर उसका पूरा ध्यान था। वह बुरा नहीं खेलना चाहता था । उसकी नसें तन गईं, वह पसीने से तरबतर हो गया ।

कुछ समय के बाद गुरू ने खेल रूकवा दिया । 'पहला पाठ पूरा हुआ !' ऐसा राजकुमार से कहा । तुमने आज दो चीज़ें सीखीं : करूणा और एकाग्रता । अब जाओ और अपने प्रतिद्वंदी को गले लगाओ जिसकी बदौलत यह पाठ सीखना संभव हुआ ।

याद

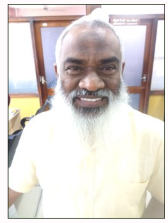

षानवाज़ नज़ीर मोहम्मद

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

रिमझिम बारिश बरस रही थी

तन्हा था मैं

दूर नज़र कुछ ढूंढ रही थी

अचानक तेरी याद आई

जो मुझे ले गयी बीते दिनों के उन सुनहरे पलों में

क्या दिन थे वो

मैं जवान - तू हसीन

हम तुम सिर्फ हम दोनों

जैसे कि दुनिया थम गई मेरे हाथों पर तेरी

मुस्कुराता चेहरा- आंखों में आंखें डाले बैठे थे हम

समय जैसे कि थम गया

क्या सुनहरे पल थे वो

मगर समय जो कभी नहीं रुकता

हम को भी साथ ले गया

कहाँ तुम– कहाँ मैं

बस इंतज़ार है मौत के

जो कोई कह रहा था कि

आत्माओं को फिर से मिलाता है।

राधिका टी.वी

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

मैं वापस जाना चाहती हूँ ....

मेरा बचपन दोबारा जीना चाहती हूँ

फिर से पापा की परी बनना चाहती हूँ

फिर से माँ के आँचल से लिपटना चाहती हूँ

फिर से भैया की ऊँगली पकड़ना चाहती हूँ

फिर से वह बचपन जीना चाहती हूँ ....

फिर से कागज़ की कश्ती बहाना चाहती हूँ .....

सतरंगी पींग को देखकर आंखें बड़ी करना चाहती हूँ...

चंदा मामा के हिरन से दोस्ती करना चाहती हूँ....

सावन की बरसातों में भीगना चाहती हूँ

सागर की लहरों में कदम भिगोना चाहती हूँ

बादलों तक पतंग उड़ाना चाहती हूँ

कोयल के सुर में सुर मिलाना चाहती हूँ।

हर आस मन की पूरा करना चाहती हूँ

हर वो गलतियां दोबारा करना चाहती हूँ

हर आँसू हर ज़ख़्म से फिर गुज़रना चाहती हूँ

हर हँसी हर खुशी हर जज़्बे को गले से लगाना चाहती हूँ

हँस-हँस के आँसू बहाना चाहती हूँ

रोते-रोते हँस पड़ना चाहती हूँ .....

जी हाँ, मैं दोबारा जनम लेना चाहती हूँ ...

मानव

कच्चे मिट्टी से बनाया था एक मूर्ति को,

बिना शदर्श से तेज़ धूप से सुखाया उसको

सूरज के किरणों से बन गई वह पक्का।

मुसलाधार के पानी से बनी उसकी अश्रु

खड़के से कुरेकर बनी उसकी ज़बान

ऐसी बन गई सच्चा चालबाज़ी मानव

जब वक़्त हुआ तो

जब रोशनदान हुआ तो

वसंत ऋतु भी जशन मनाने आए

संवत् पार हुए तो, समय चले तो.....

वह बिना सच्चाई के, बिना ईमानदारी के मानव बन गयी।।

अभिनंद अनीष

सुपुत्र जास्मिन ए, लिपिक

मेरे जीवन की राह

जब तक जड़ से जुड़े रहोगे तब तक ही टिक पाओगे
।। जड़ से नाता टूट गया तो मिट्टी में मिल जाओगे ।।
जड़ होगी मज़बूत अगर तो,
तरु भी होगा बलशाली।
विचार होंगे सुशील अगर तो,
जीवन में होगी खुशहाली ।।
जड़ें होंगी जैसी तुम्हारी वैसी ही छवि दिखाओगे।
छाप आचार-विचार की दुनिया से कैसे मिटा पाओगे ।।
साथ नदी के बहती रहती जानें कितनी धाराएं।
जानें कब तटबंधों को तोड़ सिंधु में समा जाए ।।
मिलकर साथ रहोगे तो निश्चित कुटुंब बना पाओगे।
हर आंधी, हर बिजली, हर आफ़त से लड़ जाओगे ।।
खुद को ज़िंदा रखना है तो अपने आप को सींचों तुम।
सच तो सच है उससे अपना मुंह तो मत फेरो तुम ।।
जब तक जड़ से जुड़े हुए हो तुम श्रेष्ठ कहलाओगे।
।। जड़ से नाता टूट गया तो मिट्टी में मिल जाओगे ।।

नरेश शर्मा

लेखापरीक्षक

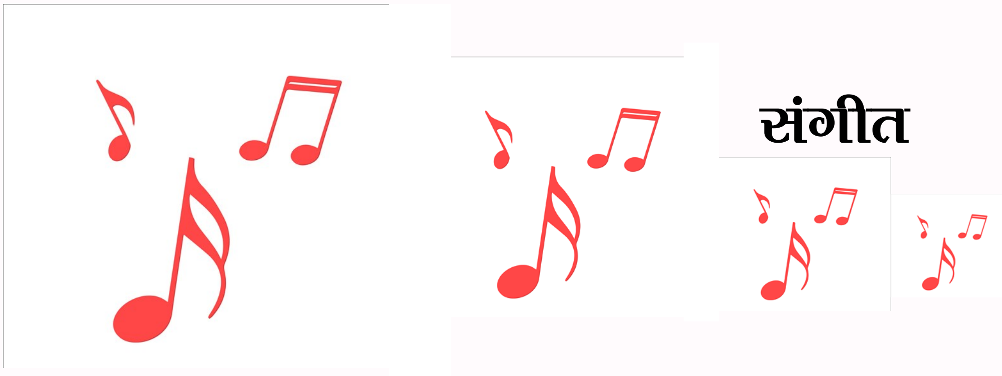

संगीत

सिमी राजेश
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

संगीत सभी के जीवन में महान भूमिका निभाता है यह हमें खाली समय में व्यस्त रखता है एवं हमारे जीवन को शांतिपूर्ण बनाता है।

सुव्यवस्थित ध्वनि, जो रस की सृष्टि से उत्पन्न होती है वह संगीत कहलाती है। संगीत हमारे जीवन में आंतरिक एवं आवश्यक भूमिका निभाता है। सभी अपने खाली समय में आनंद एवं मस्तिष्क के आराम हेतु संगीत सुनना पसंद करते हैं। धीमी आवाज़ में संगीत सुनना हमें आराम एवं शांति देता है एवं हमें मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य प्रदान करता है। यह जीवन भर हमारी मानसिक और भावनात्मक समस्याओं से लड़ने में मदद करता है।

संगीत का मानव जीवन पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है। संगीत की मनोहर मादकता का जीव जगत पर जो प्रभाव पड़ता है, वह किसी से छिपा नहीं। संगीत में काफी शक्ति होती है, एवं कई सारे स्त्रोतों से पता चलता है कि संगीत हमारी एकाग्रता को बढ़ाने का भी कार्य करता है।

जीवन में खुश एवं व्यस्त रहने के लिए संगीत सबसे अच्छा तरीका है। इस व्यस्त, भीड़-भाड़ एवं भ्रष्ट संसार में, जहां हर कोई हरेक समय एक दूसरे को हानि पहुंचाना चाहता है, ऐसे कठिन समय में संगीत हमें खुश रखता है एवं हमारे मस्तिष्क को राहत प्रदान करने में मदद करता है। संगीत वास्तव में, हमेशा खुश रखने में सहायता करने वाला एक साधन है। संगीत ध्यान और योग से अधिक है क्योंकि हमारे शरीर और दिमाग दोनों को लाभ पहुंचाता है।

पूरी मानव प्रजाति के लिए संगीत भगवान द्वारा दिया गया उपहार है। यह हमारे लिए एक आत्मीय कुंजी के समान है जो हमें मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाये रखने में हमारी सहायता करता है। संगीत वो लय है, जो बीते समय पसंदीदा स्थानों, व्यक्तियों या उत्सवों आदि की सभी अच्छी यादों एवं सकारात्मक विचारों को लाता है। संगीत बहुत ही मधुर एवं वैश्विक भाषा है।

संगीत में काफी शक्ति होती है यह लोगों के मन में कई तरीके से जगह बनाता है। जहां ये काम को बना सकता है वहीं बिगाड़ भी सकता है। संगीत से सभी के जीवन पर बहुत ही गहरा असर पड़ता है मनुष्य से लेकर पेड़-पौधे, जीव-जंतु आदि। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि संगीत के ज़रिये रोगों का उपचार भली-भांति किया जा सकता है। हृदय रोग के उपचार में इसका प्रयोग बहुत सफल रहा है। संगीत के स्वरों से पाचन संबंधित बीमारियों का उपचार भी किया जाता है।

संगीत योग की तरह है। यह हमें खुश रखता है और हमारे शरीर में हार्मोनल संतुलन को भी बनाए रखता है। इसके साथ ही यह शरीर व मस्तिष्क को राहत देने का भी कार्य करता है। जिसके कारण यह शारीरिक एवं मानसिक रूप से हमारे शरीर को स्वस्थ बनाये रखने में हमारी सहायता करता है। यह हमें मोटापे तथा मानसिक समस्याओं से भी बचाने का कार्य करता है।

संगीत को कई उत्सवों, कार्यक्रमों पर भी सुनाया जाता है क्योंकि इससे कार्यक्रमों, महोत्सवों की रौनक बढ़ती है, सबको अपना पसंदीदा संगीत सुनना पसंद होता है क्योंकि संगीत सिर्फ किसी एक विषय पर नहीं हो सकता, संगीत को आप किसी भी कारण से सुन सकते हैं, यदि आपका मन बहुत खुश है तो खुशी से संगीत सुन सकते हैं यदि आप नाराज़ हों तो भी। साथ ही शादी पार्टियों में डी जे के संगीत को भी लोग सुनना पसंद करते हैं।

संगीत हमारे अंदर की आत्मा को स्पर्श करता है और हमारी समस्याओं से लड़ने में मदद करता है, कई व्यक्तियों को संगीत सुनना बहुत पसंद है एवं वे प्रत्येक दिन संगीत सुनते हैं।

तन्हाई

जे आर मालविका

सुपुत्री श्रीमती राखी पी ओ

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वो मेरी कमज़ोरी थे ।

जो आज मुझे ज़िंदगी की,

सबसे बड़ी ताकत देकर चले गए ।

जीवन की हर सांस में, हरेक पल जीने में,

वो मेरी हंसी बन गए ।

वो मेरे लिए प्रेमी के अलावा मेरे शिव बन गए ।

मेरी मंज़िल और मेरी कामयाबी उनका प्यार था ।

मेरे सुख और दुख उनकी मौजूदगी से हुए ।

और आज.... ये तन्हाई उसी वजह से ।

ज़िंदगी में कुछ भी और चीज़,

मुझे इतना एहसास दी कि,

आज भी उनके प्यार और वो मन का एहसास

मेरी कमज़ोरी बने हुए हैं ।

उन्होंने मुझे इतना प्यार दिया कि

मेरे परिवार की खुशी के लिए

वो अपने गहरे प्यार को छोड़ दिया ।

आज ये अकेलापन मैंने चुन लिया...
क्योंकि उनके प्यार की तरह, ज़िंदगी में,

कोई भी एहसास मुझे कभी नहीं होगा ।

अगर वो मेरे साथ होता,

अगर वो मेरे परिवार बन गए तो..

तो ये तन्हाई मुझे नहीं चुननी होगी ।

इस तन्हाई से मेरी कोई नफ़रत नहीं,

कि ये तन्हाई में उनके यादें जुड़ी हुए हैं ।

उनके प्यार और उनके जान, जो,

जब तक मेरी धड़कन होगी,

तब तक मैं ज़िंदा रहूँगी ।

हर वक़्त में, हर आँसु को उनके यादों मे मिलकर

इस तन्हाई की हर पल को

जी भर मैं भोग लूंगी ।

क्योंकि ये तन्हाई उनकी देन है ।

और मैं..... उनकी आशिक़ी ।

जो शिव और पार्वती जैसे,

जी भर मोहब्बत करके जीने के लिए ख़्वाहिश की थी

लेकिन दुनिया के अलग कोने में रहकर,

दोनों तन्हा होकर जी रहे हैं...

सिर्फ तन्हाई को साथ लेकर ।

कह रही धरा तुम्हें

अमित

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कह रही धरा तुम्हें ये किस घड़ी का शोर है
बादलों का दंभ है, या विनाशता का मोड़ है
शांत से स्वभाव की नदी में क्यों ये ज़ोर है
तोड़ने को अपनी सीमा बांध का प्रबोध है
कह रही धरा तुम्हें ...

घुमड़-घुमड़ उमड़ रहे मेघों का प्रचंड क्यों
इस सदी में कौन सी त्रासदी का नाच है
पर्वत, जंगल और गिलाएं चल रहे क्यों साथ है।
कायदा जो था बना सब उसके क्यों ख़िलाफ़ हैं
कह रही धरा तुम्हें...

वंसुधरा की इस धरा में प्रकोप ये प्रचंड है
विलासिता की ओट में जो फैला था पाखंड है
अश्रुओं से बह रहे प्रपात से शिखंड हैं
राग में अलापती वसुंधरा का दंड है
कह रही धरा तुम्हें...

रौद्र रूप ले चुकी नदी कहे प्रपात से
प्रपात बस है रो रहा हिमपात के संताप से
क्यूं और किस लोभ में किया ये सबने पाप है
वसुंधरा है दे रही लुटी धरा को श्राप है
बता रही धरा तुम्हें ये किस घड़ी का शोर है

इस धरा के मान को वसुंधरा की शान को
गवाँ दिया पाताल में इंसान ने वरदान को
कैसी प्रलय ये लाएगा मनुष्य का विज्ञान है
कह रही धरा तुम्हें ये किस घड़ी का शोर है

औरत

सुनील कुमार

डी ई ओ

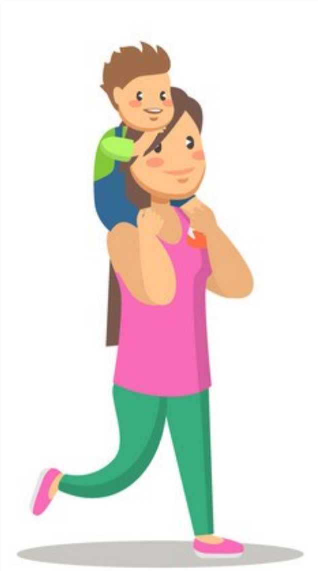

क्या रूप दिया इस दुनिया ने औरत का,
बेटी, बहन, पत्नी और माँ का।
बचपन से जितना सिखाया, उससे बढ़कर कर जाती वो,
बेटी माँ-बाप का ग़ुरूर, बहना भाई की आन बन जाती वो।
जब आती उस पल की बारी,
जहां बचपन, गलियां, घर रिश्ते-नाते छोड़कर।
चली जाती वो एक नई दुनिया बसाने,
बिना किसी शिकायत के आगे बढ़ जाती।
मान-सम्मान सब रिश्तों को जोड़े रखने का कमाल कर जाती,
परिस्थितियों से न डरकर, दृढ़ता से उनका सामना कर जाती।
अब बारी आती दुनिया के सबसे खुबसुरत रिश्ते में ढलने की।
माँ....................
हां वही माँ, वही प्यारा और अनमोल रिश्ता,
जिसके साथ युगों-युगों से प्यार, ममता और परवाह
और सबसे बड़ी शक्ति जुड़ी अपने बच्चे के लिए,
आज जब माँ बनने की खुशियां उसे मिलने वाली,
ना जाने कहां वो दिव्य स्वरूप, कैसे वो मसीहा,
अपनी संतान के लिए बन जाती, हर मुसीबत में लड़ जाती,
नौ महीने अपने अंश को अंदर रख इस दुनिया को,
इस कीमती उपहार के लिए बार-बार आभार व्यक्त करा,
उन लम्हों को भरपूर जीना, अपना प्यार,
अपनी दुआएं, इन नौ महीनों में दे जाती।
हाँ... ये वही कन्या रूप जन्मी औरत,
माँ बनकर दुनिया को आगे बढ़ाती,
जब अपने अंश को वो इस दुनिया में लाती।

मेरी अमानत

अतुल कृष्णा डी,

सुपुत्र श्री कृष्णकुमार वी जी

लेखापरीक्षक

एक दिन मुझे जगाया सोने से,
तो मिल गई मुझे एक खूबसुरत अमानत
मुझे न मालूम था कि-
वो सपना था या सच्चाई
बार-बार मैंने देखा आंखें खोलकर
तो मुझे पता चला कि वो अमानत
सपना न थी सच्चाई है।
उस समय बताया मेरी माँ ने मुझसे
वो सिर्फ तुम्हारी ही अमानत है।
आप जानना चाहते हैं कि-
क्या थी वो अमानत
वो है मेरा नन्हा-सा, प्यारा-सा भैया।
सिर्फ मेरा छोटा भैया।।

केरला के मुख्य त्योहार ओणम के उपलक्ष्य में कार्यालय में आयोजित समारोह की झलकियाँ

എജീസ് ഓഫീസ് സ്റ്റാഫ് റിക്രിയേഷൻ ക്ലബ്ബ്

महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)

एवं

महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) के कार्यालय

केरला, तिरुवनंतपुरम